हरदेवी:उन्नीसवीं सदी की एक विस्मृत नायिका

रमण सिन्हा

किसी को भूलना मानो
आँगन की बत्ती बुझाना भूल जाना है
और उसे पूरे दिन जलने के लिए छोड़ देना है:
लेकिन यह रोशनी ही है
जो तुम्हें यह याद दिलाती है। *(येहुदी अमीचाई)*

- *मक्र-ओ –फरेब मर्दों ने सताया हमें बहुत / तू बन के दुश्मनों का खूंखार खबर ले।*
  हालत है दर्दनाक ज़रा गौर से सुनो / बरस हो चुके इस हालत में दस हजार खबर ले। *(हरदेवी)*

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का 1885 में जब गठन हुआ तो महादेव गोविन्द रानाडे और रघुनाथ राव जैसे संस्थापक सदस्यों को यह उम्मीद थी कि इसके मंच से सामाजिक ,आर्थिक और राजनैतिक सभी मुद्दे उठाए जाएंगे लेकिन जल्द ही उन्हें इस बात का एहसास हो गया कि कांग्रेस के कुछ ताकतवर लोग ऐसे हैं जो सामाजिक मुद्दों को राजनैतिक एकता के लिए बाधक समझते हैं; चुनांचे इन दोनों ने मिलकर राष्ट्रीय सामाजिक सम्मलेन की नींव डाली जिसका पहला अधिवेशन मद्रास में 1887 में हुआ ।प्रति वर्ष होने वाला यह अधिवेशन कांग्रेस अधिवेशनों के बाद उसी स्थान पर आयोजित होता था।[1] इसका उद्देश्य सामाजिक मुद्दों को प्रगतिशील ढंग से उठाने वाले प्रतिनिधि लोगों के आपसी विचार विमर्श के लिए एक मंच बनाना था जैसे राजनैतिक मुद्दों के लिए कांग्रेस थी ।सामाजिक मुद्दों में स्त्री से जुड़े मसले प्रमुख थे ।सन 1892 के छठे राष्ट्रीय सामाजिक सम्मलेन में *भारत भगिनी* की सम्पादक श्रीमती हरदेवी(1859- 1926) ने कहा कि राष्ट्रीय सामाजिक सम्मलेन कांग्रेस से अधिक महत्वपूर्ण संगठन है क्योंकि यहाँ स्त्रियों के सरोकार को पुरूषों के सरोकार से अलग नहीं माना जाता ,फिर उन्होंने टेनीसन की कविता उधृत करते हुए कहा "कांग्रेस के द्वारा लोग सरकार से न्याय पाने की आशा करते थे जबकि सम्मलेन के द्वारा उनकी सामाजिक स्थिति में वास्तविक सुधार हुआ है ।ब्रिटिश सरकार से लोगों को जिस न्याय की उम्मीद थी, उसके लिए उन्हें उन लोगों के साथ न्याय करने के लिए तैयार रहना चाहिए जिनके खुशी और गम,दुःख और सुख उनके साथ इतने जुड़े हुए थे। यह ठीक ही कहा गया है कि , " स्त्रियों के मुद्दे पुरूषों के हैं / उठते हैं साथ-साथ,साथ-साथ गिरते हैं,/लघु मानव या ईश्वर बनकर ,चाहे बंधनयुक्त या हों उन्मुक्त।"[2]टेनीसन की इस कविता के

---

[1] ऐसी व्यवस्था दस वर्ष तक कायम रही लेकिन 1895 ई.में कांग्रेस ने अपने मंच के इस्तेमाल करने पर रोक लगा दी,इन्डियन स्पेक्टेटर ने इसे इन्डियन सोशल कान्फरेन्स के आत्मनिर्भर होने की दिशा में एक सकारात्मक कदम माना ।देखें,**Radha Kumar,The History of Doing, Zubaan,Kali for Women,New Delhi,1993,p.53**

[2]**. See,Vidya Dhar Mahajan,Modern Indian Poltical Thought,S.Chand & Company,New Delhi,First Edition 1987,p.176**

माध्यम से स्त्री प्रश्न के मर्म को उद्घाटित करने वाली हरदेवी उत्तर भारत के पुरूष प्रधान समाज में उन चंद स्त्री बुद्धिजीवियों में थीं जिन्होंने उन्नीसवीं शताब्दी के आखिर और बीसवीं शताब्दी के आरंभिक दशकों में विधवाओं की स्थिति में सुधार और स्त्री –शिक्षा के मामलों को जोर –शोर से उठाया लेकिन जिसका व्यौरा बंगाल-नवजागरण केन्द्रित आधुनिक भारत के इतिहास लेखन में तो कहीं नहीं ही दिखाई पड़ता है,हिन्दी साहित्येतिहास ने भी इसका संज्ञान लेना उचित नहीं समझा जबकि *स्त्री विलाप'(1881),सीमंतनी उपदेश(1882)* जैसी विचारोत्तेजक रचना, *'लन्दन यात्रा (1888) और 'लन्दन जुबली(1889)* जैसे दिलचस्प यात्रा-संस्मरण,*हुक्मदेवी(1892)* जैसे उपन्यास, *स्त्रियों पै सामाजिक अन्याय(1892)* जैसे लेखों की तेजस्वी लेखिका ने अपने अनगिनत ओजस्वी भाषणों ,'भारत भगिनी' (1889-1906) जैसी पत्रिकाओं,नारी शिल्पालय (1902)जैसी संस्थाओं के सहारे साहित्य और समाज में नारी जागरण का जैसा काम किया,वह हिन्दी क्षेत्र के लिए अत्यंत दुर्लभ और चिरस्मरणीय है। उन्नीसवीं शताब्दी के भारत में जहां स्त्रियों द्वारा गठित सभा या समितियों के उदाहरण कुछ गिने चुने ही मिलते हैं,जैसे पंडिता रमाबाई(1958-1922) द्वारा पुणे में स्थापित आर्य महिला समाज (1882) या कलकत्ता में स्वर्ण कुमारी देवी (1855-1932) की सखी समिति (1886); हरदेवी ने 1885 ई. में हेमंतकुमारी देवी(1868-1953) के साथ मिलकर लाहौर में *वनिता बुद्धि-विकासिनी सभा* का गठन किया और स्त्रियों को तकनीकी कौशल प्रदान कर आर्थिक रूप से स्वतन्त्र बनाने के ख्याल से लाहौर में ही *नारी शिल्पालय* और लाचार वृद्धों के लिए *सुन्दरी आश्रम* की नींव डाली।[3] अपने देश में बाल-शिक्षा के क्षेत्र में किंडरगार्टन प्रणाली को लागू करने वालों में वे आरंभिक प्रयोगकर्ताओं में थीं ।सार्वजनिक क्षेत्र में स्त्रियों की आवाज बनने वाली हस्तियों में भी वे अग्रगामी थी । उनके एक भाषण की रिपोर्टिंग बंबई गार्डियन के संवाददाता ने इन शब्दों में की है : "कुछ दिन पहले तक किसी भारतीय स्त्री के लिए ,जो एक पत्रिका की संपादिका भी हो, विधवाओं की स्थिति और उसको सुधारने की व्यावहारिक तरीकों पर किसी आम सभा में खड़े होकर भाषण दे,एक असंभाव्य संभावना थी। लेकिन यही बंबई में पिछले हफ्ते शुक्रवार को घटित हुआ । प्रार्थना समाज के सभागार में लाहौर की *भारत भगिनी* की संपादिका श्रीमती हरदेवी रोशनलाल ने दिलचस्प भाषण दिया ,विषय था हिन्दू विधवाओं की स्थिति और सुधार के व्यावहारिक तरीके ।इनके भाषण को श्रोताओं ने काफी सराहा जिसमें कई हिन्दू स्त्रियाँ भी शामिल थीं। हिन्दू विधवा सुधार आन्दोलन के अग्रणी पैरोकार माधवदास रघुनाथदास की पत्नी इस सभा की अध्यक्ष थीं।"[4] इसी प्रकार 1893 के सामाजिक सम्मेलन

---

3 "लाहौर में भारत भगिनी की सुसंस्कृत सम्पादिका ने दो दो काम एक साथ करने का बीड़ा उठाया जिसके लिए उन्हें लोक सहानुभूति की जरूरत है ।सुन्दरी आश्रम तो स्मृतिस्वरूप अपनी माँ (स्वर्गीय रायबहादुर कन्हैया लाल की विधवा)के छोड़े गए बीस हजार रूपये से उन्होंने शुरूआत की जिसमें साठ से ऊपर के ऐसे तीस अनाथ स्त्री पुरूष के रहने की व्यवस्था की गयी है जिनके पास कोई साधन नहीं है और जो लज्जावश सार्वजनिक रूप से भीख भी नहीं मांग सकते । दूसरा काम नारी शिल्पालय तो अपने समय का आन्दोलन है,जिसका उद्देश्य हमारे देश के स्त्रियों ---हिन्दू और मुसलमान दोनों को उपयोगी शिल्प सिखलाना है ।हमलोग भारत के सभी सच्चे हितैषियों की दिली इच्छा है कि इन उदात्त कामों के लिए श्रीमती हरदेवी रोशनलाल कोसभी सहूलियतें हाशिल हों।" देखें, Prabuddha Bharata,No.70,May 1902,Mayavati,Kumaon,p.92

4 Hindu Ladies Taking Part in a Public Meeting, The Englishwoman's Review of Social and Industrial Questions,Helen Blackburn and Antoinette M. Mackenzie London,1902,p.27 https://www.google.co.in/books/edition/The_Englishwoman_s_Review_of_Social_and/k6PZDQAAQ

में एक विशाल सभा को संबोधित करते हुए हरदेवी को देखकर महान सुधारक गोपाल गणेश अगरकर(1856-1895) ने अपने पत्र *सुधारक* में इसे एक *उत्साहवर्धक दृश्य* (एलिवेटिंग साइट) घोषित किया था।[5] ऐसे समय में जब स्त्रियाँ घरों से बाहर निकले में भी झिझक रही थी, हरदेवी ने सार्वजनिक मंचों से स्त्री जीवन की ख़ास-ख़ास समस्याओं को न सिर्फ बेबाकी से उठाया बल्कि ताउम्र उसके व्यावहारिक कार्यान्वयन के लिए प्रयत्नशील रहीं ----चाहे वह स्त्री शिक्षा या विधवा विवाह का मामला हो या सहवास की सम्मति के उम्र (एज ऑफ कंसेंट) का मसला हो या स्त्री अस्पताल की आवश्यकता का मुददा हो या फिर स्वदेशी का ही मामला क्यों न हो --- वे हर मामले में अत्यंत मुखर,सक्रिय और अग्रगामी थीं।

***   ***   ***

हरदेवी के जीवन के बारे हमें छिटपुट जानकारियाँ ही मिलती हैं ,उन्होंने अपने यात्रा-संस्मरणों ----लन्दन-यात्रा और लन्दन जुबली में भी अपने बारे में बहुत कम बताया है। 1901 के एक दस्तावेज में उन्हें 42 वर्ष का बताया गया है,अत: उनका जन्म 1859 ई.ठहरता है ।[6] हरदेवी के पिता का नाम रायबहादुर कन्हैयालाल (1820 -1888) था ,जिनकी ख्याति लाहौर के एक प्रमुख अभियंता ,इतिहासकार और फारसी और उर्दू के कवि के रूप में थी। रायबहादुर कन्हैयालाल आगरे जिले के जालेसर नामक स्थान के रहने वाले थे और उन्होंने इंजीनियरिंग की पढाई रूड़की से 1851 में पूरी की थी और वे लाहौर के लोक निर्माण विभाग में तीस साल तक एग्जीक्यूटिव इंजीनियर के पद पर रहे,इस पद पर पहुँचने वाले वे पहले भारतीय थे ।उन्होंने मेयो कॉलेज ऑफ आर्ट ,कायदे-आजम लाइब्रेरी के अलावे दाई अंगा का मकबरा, सर्फुनिशा बेगम का मकबरा ,जहांगीर के बेटे शाहजादा परवेजका संगमर्मरी मकबरा, जहांगीर और आसिफ जहा के शाहदरा के मकबरे जैसे कई मुग़ल कालीन भवनों की मरम्मत में अहम् भूमिका निभाई थी ।वे भारतीय अभियांत्रिकी पर पेशेवर लेख भी लिखते थे,जिसमें कुछ किताबें इंजनियरिंग कालेजों में पढ़ाने के लिए हिन्दुस्तानी में भी लिखी गयी थीं ।[7] *तारीख-ए-पंजाब* और *तारीख-ए- लाहौर* उनकी अत्यंत महत्वपूर्ण

BAJ?hl=en&gbpv=1&dq=hardevi+roshanlal&pg=PT254&printsec=frontcover(accessed on 24.12.2022)

[5] देखें,**Parimala V.Rao,Women's Education and the Nationalist Response in Western India, Indian Journal of Gender Studies,15:1,2008,p.142**

[6] भारत -भगिनी के सर्कुलेशन का ब्यौरा देते हुए द *पंजाब प्रेस में* १९०१ के एक नार्मन जेरल्ड बैरियर ,पॉल वेल्ज़ ,अंक **14** औफ़ ओकेजनल पेपर्स :साउथ एशिया सीरीज़,मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी एशियन स्टडीज़ सेंटर ,प्रकाशक रिसर्च कमिटी आफ पंजाब ,**1970**

लिखा गया है "प्रोपराइटर :श्रीमती हरदेवी ,कायस्थ ,एज **-42** ,डाटर ऑफ़ द लेट राय बहादुर कन्हैयालाल,एग्जीक्यूटिव इंजिनियर ,लाहौर एंड वाइफ़ आफ़ रोशनलाल ,बी.ए .बैरिस्टर एट लॉ (**01**)पब्लिशर इज़ हेमराज खत्री ,एज **34** ;द पंजाब प्रेस ,**1880 -1905** ,नार्मन जेरल्ड बैरियर ,पॉल वेल्ज़ ,अंक **14** औफ़ ओकेजनल पेपर्स :साउथ एशिया सीरीज़,मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी एशियन स्टडीज़ सेंटर ,प्रकाशक रिसर्च कमिटी आफ पंजाब ,**1970**

[7] **Obituary. Rai Bahadur Kanhaiya Lal, Minutes of the Proceedings of the Institution of Civil Engineers, Volume 94, Issue 1888: Part 4, pp.313-317; https://www.icevirtuallibrary.com/doi/10.1680/imotp.1888.20899**

इतिहास ग्रन्थ है जिसमें एक उपन्यासकार की तरह तथ्य को रोचकता के साथ प्रस्तुत किया गया है ,विशेषकर 'तारीख-ए -लाहौर' में तो पूरा विवरण इतना जीवंत है कि पढ़कर शहर में घूमने का एहसास होता है।शहर के मेले-ठेले से लेकर मंदिर मस्जिद मकबरे सभी ऐतिहासिकता के बोझ से दबे होने के बजाए और उभर कर सामने आते हैं ।इसकी भूमिका में अपना परिचय देते हुए खुद को वे लाला हरनारायण कायस्थ का बेटा[8] बताते हैं ।1868 में सर जान लारेंस ने उन्हें 'राय' और 1876 में वायसराय लार्ड नार्थब्रुक (कार्यकाल 1872-1876)ने उन्हें ' बहादुर' की उपाधि प्रदान की थी।सेवानिवृत्ति के बाद सरकार ने उन्हें लाहौर नगर निगम का अध्यक्ष भी बनाया था जो तब तक किसी भारतीय को नहीं बनाया गया था ।वे लाहौर और पंजाब विश्वविद्यालय के सीनेट के आजीवन सदस्य भी रहे ।वे फारसी के एक अच्छे कवि भी थे ,हीर रांझा पर उनकी मसनवी *नीगरीन नामा* एक उल्लेखनीय रचना मानी जाती है ।[9]इसके अलावे फारसी में गुलज़ारे-हिन्दी और महाराजा रणजीत सिंह के जीवन पर भी उनकी एक काव्य-कृति है।[10]वे समाज-सुधार में भी दिलचस्पी रखते थे और लाहौर में कायस्थ धर्म-सभा के संस्थापक सदस्यों में थे ।[11] इन्होंने अपनी प्रतिभा से अकूत संपत्ति अर्जित की थी और लाहौर के धनी मानी व्यक्तियों में शुमार किए जाते थे ।इनके दो ही संतान थे---पुत्र सेवाराम और पुत्री हरदेवी ।स्पष्ट ही हरदेवी का लालन पालन,शिक्षा-दीक्षा लाहौर में सुख-सुविधाओं वाले बौद्धिक परिवेश में हुआ होगा लेकिन उस दौर के वृतांतों में इसका उल्लेख न होकर महज उनके बाल-विधवा होने को ही रेखांकित किया गया है ;जबकि उनका विवाह चौदह वर्ष की उम्र में हुआ था, यह अपनी पहली रचना *स्त्री विलाप* के पाठकों को स्वयं वे बताती हैं: "पाठक गण!यहाँ मैं कुछ अपने विवाह का हाल लिखती हूँ ----

मेरी सगाई प्रोहित (पुरोहित)नाई ने रूपये के लालच में एक ऐसे घर में की कि जहां न तो वर ही अच्छा था और न घर में ही कुछ था ,करा दी।उस वक्त मेरी उम्र चौदह साल की थी ,वर और विवाह का अर्थ अच्छी तरह समझती थी। जब कोई कह देता कि अच्छा वर है तब जी में खुश हो जाती,जब कोई कहता कि वर अच्छा नहीं तब जी में कुढ़कर चुप रहती ।जब विवाह का समय आया और बरात निकट पहुँची तो देखने वालों की ज़ुबानी सुना कि वर बिलकुल कन्या के लायक नहीं है,पस उस वक्त मेरे दिल में वर के देखने की जैसी बेकरारी हुई मेरा ही जी जानता है,मगर कलियुग के भाईयों की जानों को रोकर सिवा रोने के कोई चारा न देखा,हमारी कौम में एक दस्तूर है कि जब बरात दरवाजे पर आती है तो एक नायन कन्या को गोद में

---

[8] **Ibid**

[9] देखें, **Rai Bahadur Kanhaiya Lal's Lahore is gone forever**
https://lahorenama.wordpress.com/2010/11/09/rai-bahadur-kanhaiya-lals-lahore-is-gone-forever/

[10] **1888 Institution of Civil Engineers: Obituaries, see, Rai Bahadur Kanhaiya Lal https://www.gracesguide.co.uk/Rai_Bahadur_Kanhaya_Lal(accessed on 24.12.2022)**

[11] **Lucy Carol Stout, The Hindustani Kayastha: The Kayastha Pathshala,and the Kayastha Conference,1873-1914, Ph.D.dissertation, University of California,Berkeley,p.154**

लेकर मुख में चावल भरवा के सात दफा वर के ऊपर फेंकवाती है ,ज्यों ही नायन ने चावल थूकने को मेरा मुख खोला मैंने वक्त को गनीमत जान कर अच्छी तरह वर को देखा ।

“ मगर उस वक्त मुझे इतनी पहचान की अकिल न थी,पर खूबसूरती बदसूरती को खूब पहचानती थी,देखते ही गम के दरिया में डूब गयी मगर सिवाय सबर के कोई किनारा न पाया । लोग खुशियाँ मनाते थे ,मेरे दिल की हालत कोई नहीं जानता था ।खान पान और वस्त्र भूषण कुछ अच्छा नहीं लगता था,माता-पिता बांधव लोग जानते थे कि हमारी जुदाई से इसकी यह दशा हो रही है ।

“फिर जब कन्या दान के समय मेरे पिता ने मेरा हाथ पकड़ वर के हाथ में दिया तो मैंने बहुत चाहा कि मैं अपना हाथ न पकड़वाऊँ मगर लाचार हो रोने लगी और कुछ न कह सकी,फिर जब फेरे फिराने को ले चले तब भी उच्च स्वर से रोती कि जैसे किसी बेगुनाह को फांसी पर चढाने ले जाते हैं ।

“ पस मेरा हाल परमेश्वर ही जानता था न किसी से कह सकती थी न कोई उस वक्त समझने वाला था ,फिर विदा के दिन अलग एक कोने में खिड़की से वर को देखने लगी और दिल में कहती थी कि हाय! मेरे पिता की बुद्धि बिलकुल नष्ट हो गई, हाय! इस समय कोई मेरे पिता को नहीं समझाता ,हाय! परमेश्वर मैं कैसे इसके साथ तमाम उमर काटूँगी जिस को कि अभी मेरे नेत्र कबूल नहीं करते,अगर तूने मेरे वास्ते दुनिया में ऐसा ही वर पैदा किया था तो मेरी उमर भी बहुत न करना ताकि मैं शीघ्र ही दुखों छूट जाऊं ,हा! नाई प्रोहितों परमेश्वर तुम से मेरा बदला लेवें ;मेरे पिता ने बहुत दान-दहेज़ दिया ,क़ीमती जवाहरात के निहायत ख़ूबसूरत भूषण,बहुत अच्छे वस्त्र,रूपया,अशरफी,सवारी,मकान,बाग़,जमीन आदि सब चीजें गृहस्थी की दीं किन्तु इस समय से स्वामी को बड़ा अमीर बना दिया ,मगर इन सब चीजों से मुझे किंचित भी खुशी न हुई किन्तु उल्टी यह सब चीज मेरे दुःख का कारण हुई । जो मेरे पिता मेरी संमति लेकर विवाह करता तो मुझे इन चीजों के न देने से भी बड़ा आनंद होता क्योंकि चाहे कोई तमाम दुनिया का बादशाह हो जाय पर दिल में रंज रहे तो वह नरक के समान दुखी रहता है और किसी के दिल को रंज फिक्र न हो तो नरक भी स्वर्ग के समान सुखदाई भाषता है।

“आखिर नाई प्रोहित की जान को रो रो कर समय काटती रही,जो जो पेश आई सहारती रही;कुछ दिन बाद दैव योग से मुझमें स्वामी से प्रीति हो गई तब मैंने यह तमाम हाल अपने स्वामी के आगे कहा। मेरे स्वामी ने इस रस्म के निकालने वालों और करने वालों और कलियुग का बहाना कर कन्याओं के अधिकार छीनने वालों की अकिल पर बड़ा ही अफसोस किया और कसम खाई कि यदि हमारे कन्या होगी तो बगैर उस की संमति के लिए हम उसका हरगिज २ विवाह न करेंगे ।’’[12] इस उद्धरण में लेखिका के व्यक्तित्व के कई पहलू उभर कर सामने आते हैं जिसमें उनके स्त्री व्यक्तित्व का पारदर्शी होना सबसे अधिक ध्यान खींचता है ----यह एक ऐसे व्यक्तित्व की वाणी है जो पितृसत्तात्मक संसार में एक स्त्री की स्वतंत्रता का मूल्य जानता है, जो सुख-सुविधाओं के होने मात्र को सुख नहीं मानता और अपने अधिकार के प्रति सचेत भी है लेकिन

[12] हरदेवी,स्त्री विलाप,आर्य दर्पण प्रेस शाहजहाँपुर,संवत **1938 (1881)** पृष्ठ **13-15**

बगैर मरजी जबरदस्ती के अपने विवाह का खुल कर प्रतिरोध नहीं कर पाता और संभवत: यह भी कारण हो कि लेखिका ने पुस्तक में अपना नाम न देकर *एक महा दु:खित विधवा* के नाम से छपवाना उचित समझा हो।[13] इसी वर्ष बंबई में प्रार्थना सभा के मंच से उन्होंने हिन्दू विधवाओं की स्थिति पर एक मार्मिक व्याख्यान दिया जिसकी गूँज बहुत दूर और देर तक सुनाई पड़ी।स्त्रियों को संबोधित करते हुए उन्होंने विधवाओं के पुनर्विवाह की जोरदार वकालत की जिसमें तार्किकता के साथ साथ स्वानुभूत पीड़ा का ओजस्वी भावावेश भी था।यह भाषण इतना चर्चित हुआ कि न सिर्फ इसे मराठी में अनूदित कर इसे प्रार्थना समाज के मुखपत्र सुबोध पत्रिका (7 अगस्त 1881) में प्रकाशित किया गया बल्कि बाबा पद्मनजी (1831-1906) के प्रख्यात उपन्यास यमुनापर्यटन (1857),जिसे अधिकाँश आलोचक भारत का पहला उपन्यास मानते हैं , का जब दूसरा संस्करण 1882 में छपा तो इस व्याख्यान को उसके परिशिष्ट में शामिल किया गया,उपन्यासकार का यह तर्क था कि व्याख्यान की युक्तियों से उपन्यास की नायिका यमुना प्रमाणिक सिद्ध हुई है।[14] इसके अगले संस्करण में (यमुनापर्यटन की तीसरी आवृति,1889 ई.)में लेखिका के एक और लेख को यह कहते हुए परिशिष्ट में शामिल किया गया कि उपन्यास पर जो विधवा जीवन की अतिरंजनापूर्ण चित्रण का आरोप लगा है,वह कितना असत्य है,यह इससे प्रमाणित होता है।[15] उपन्यासकार बाबा पद्मनजी के अनुसार यह लेख अंगरेजी पत्रिका द *गोस्पेल इन आल लैंड्स* के अप्रेल1889 के अंक से अनूदित किया गया था।[16] यह वही लेख था जिसे *हिन्दू विडोज़ बाई वन ऑफ़ देम,रिटन बाय अ यंग विडो,एंड ट्रांसलेटेड बाय एन इंग्लिश लेडी* के नाम से जर्नल आफ द नेशनल इंडियन एसोसियेशन के नवम्बर 1881 के अंक में छापा गया था। [17] सूसी थारू और के.ललिता द्वारा संपादित *वुमन राईटिंग इन इंडिया* में मराठी के इन दोनों लेखों को माया पंडित से अंगरेजी अनुवाद कराकर संकलित किया गया है।[18]इस लेख की प्रसिद्धि का आलम यह था कि देवेन्द्र एन.दास ने *नाइनटीन्थ सेंचुरी* पत्रिका में जब द *हिन्दू विडो* नामक लेख लिखा तो न सिर्फ इसके एक अंश को उद्धृत किया बल्कि पूरे लेख की बुनियाद ही इस पर रखी।[19]यही नहीं बल्कि पंडिता रमाबाई ने जब द *हाई कास्ट हिन्दू वुमन*

---

13 देखें स्त्री विलाप पुस्तक का मुख-पृष्ठ,जहां लिखा है : स्त्री विलाप अर्थात गड़बड़ स्मृति बुढ़िया पुराण से बगैर मरजी जबरदस्ती का विवाह,जिसको इन की सताई हुई एक महादुखित विधवा ने रचा है।

14 देखें, पुरवणी अंक 5 ,दूसरी आवृति की प्रस्तावना,यमुनापर्यटन,बाबा पद्मनजी ,स्नेहवर्धन प्रकाशन,पुणे ,सातवी आवृत्ति ,2005,पृष्ठ 10 -12 और 111-112

15 वही

16 वही

17 हिन्दू विडोज़ बाई वन ऑफ़ देम,रिटन बाय अ यंग विडो,एंड ट्रांसलेटेड बाय एन इंग्लिश लेडी,जर्नल आफ द नेशनल इंडियन एसोसियेशन, नवम्बर 1881,सी.केगन पॉल एंड कंपनी ,लन्दन,पृष्ठ 624 -630

18 सूसी थारू और के.ललिता(एडिटर्स) , वुमन राईटिंग इन इंडिया,वॉल्यूम 1, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,दिल्ली ,1991 ,पृष्ठ 356 – 358

19 **I cannot conclude this description of the treatment of Hindu widows in the North - West Provinces of India without quoting some of the burning words of one of them, which were translated by an English lady and published in the Journal of the National Indian Association for November** 1981: ***Why do the widows of India suffer so? Not for religion or piety. It is not written in our ancient books, in***

(1887)के पांचवा अध्याय, जो वैधव्य पर केन्द्रित है, लिखना आरम्भ किया तो उन्हें भी अपने कथन की सत्यता प्रमाणित करने के लिए इसी लेख की याद आई और वे इसे हू-ब-हू उद्धृत करती हैं[20] और साथ ही साथ हरदेवी की ही *आर्य स्त्रियों की प्रार्थना* को भी वर्त्तमान सन्दर्भ में अपने शब्दों से अधिक उपयुक्त मानकर उद्धरण देती हैं।[21]ये दोनों ही रचनाएं ---- *आर्य स्त्रियों की प्रार्थना* और *रांडो पर सितम* - हरदेवी के *सीमंतनी उपदेश* में शामिल हैं जो 1 फरवरी 1882 को प्रकाशित हुई लेकिन इन तीनो ही रचनाओं में रचनाकार का नाम नहीं दिया गया है,इसका क्या कारण हो सकता है ?[22] लेखिका ने जिस तरीके से अपने पिता को याद किया और जिस रैडिकल अंदाज में विधवाओं की स्थिति और उनके पुनर्विवाह की बात उठाई, प्रश्न उठता है कि क्या उन्नीसवी शताव्दी का अभिजात समाज इसके लिए तैयार था? विशेषकर तब जब लेखिका अपने जीवन को ही सन्देश बनाने की महत्वाकांक्षा रखती हो। और क्या यह महज संयोग है कि पिता के जीवन-काल में कोई भी रचना लेखिका के नाम से नहीं छपी?[23] बिपिन चन्द्र पाल की स्मृति- लेखा *मेमोयार्स ऑफ माय लाइफ एंड टाइम्स* (1932) में इसके कुछ संकेत मिलते हैं,वे लिखते हैं: "लाहौर प्रवास के दौरान करोड़पति राय बहादुर कन्हैया लाल के सुपुत्र स्वर्गीय श्री सेवाराम को जानने का अवसर मिला। अपनी पत्नी और विधवा बहन के साथ सेवाराम शिक्षा पूरी करने इंग्लैण्ड गए थे। उन्होंने अपनी

---

any of the Shástras or Mahabharata. None of them has a sign of this suffering. What Pandit has brought it upon us? Alas! That all hope is taken from us! We have not sinned, then why are thorns instead of flowers given us? Thousands of us die, but more live. I saw a woman die, one of my own cousins. She had been ill before her husband's death; when he died she was too weak and ill to be dragged to the river. She was in a burning fever; her mother in-law called a water -carrier and had four large skins of water poured over her as she lay on the ground where she had been thrown from her bed when her husband died. The chill of death came upon her, and in eight hours she breathed her last. Every one praised her and said she died for love of her husband. I knew another woman who did not love her husband, for all their friends knew they quarreled so much that they could not live together. The husband died, and when the news was brought the widow threw herself from the roof and died. She could not bear the thought of the degradation that must follow. She was praised by all. A book full of such instances might be written. The only difference for us since sati was abolished is, that we then died quickly if cruelly, but now we die all our lives in lingering pain. We are aghast at the great number of widows. How is it that there are so many? The answer is this, that if an article is constantly supplied and never used up it must accumulate. So it is with widows; nearly every man who dies leaves one , often more ; though thousands die , more live on . The English have **abolished sati; but, alas! Neither the English nor the angels know what goes on in our houses, and Hindus not only don't care but think it good!देखें, The Nineteenth Century: A Monthly Review Edited By James Knowles Vol. Xx. July-December 1886, Kegan Paul Trench, & Co. London, pp.364- 372**

20 "A Hindu gentleman contributes an article entitled "The Hindu Widow," to "The Nineteenth Century." I quote from this as testimony from the other sex, of the truthfulness of my statement, lest I should appear to exaggerate the miserable condition to which my sister-widows are doomed for life" Pandita Ramabai Saraswati, The High Caste Hindu Woman, Fleming H.Revell Company, New York, Chicago Toronto, 1901, p.114

21 "Here is a prayer by a woman doomed to life-long misery, which will describe her own and her sisters' feelings better than any words of mine. It was written by a pupil of a British Zenana missionary, one of the few Hindu women who can read and write, and one who has tasted the bitter sorrows and degradation of Hindu widowhood from her childhood." Ibid, p.111

22 हिन्दी साहित्य संसार में इस प्रश्न पर काफी माथापच्ची की गयी है ,देखें डा. धर्मवीर,सीमंतनी उपदेश की लेखिका कौन थी,हंस ,जून 1999 ,पृष्ठ 38-40,चारू सिंह,'अज्ञात' हिन्दू स्त्री कैसे बनती है?,आलोचना,सहस्राबदी अंक 58,अप्रेल-जून 2016,पृष्ठ 15-44

23 लन्दन-यात्रा पहली रचना है जिसपर लेखिका के नाम हैं और यह अगस्त 1888 में प्रकाशित हुई जबकि पिता की मृत्यु 23 फरवरी 1888 को हो गयी थी

विधवा बहन को रौशनलाल ,बार-एट-लॉ से पुनर्विवाह करने में मदद की ।यह उनके पिता की इच्छा के प्रतिकूल था और जिससे पिता-पुत्र के बीच एक कष्टकर गलतफहमी पैदा हो गयी ।''[24] यह भी एक तथ्य है कि हरदेवी के पुनर्विवाह की सूचना उनकी माँ को जीते-जी नहीं दी गयी ।[25] अन्य दो रचनाओं की लेखिका हरदेवी हैं,यह हमें पहले पहल उनकी पुस्तक *तामीले-तीफ्लां* की पुस्तक समीक्षा से मिलती है जो द *इन्डियन मैगजीन* के जुलाई 1889 के अंक में छपी थी;समीक्षक लिखता है: " तालीम –ए –तीफ्लां (किंडरगार्टन): बाल शिक्षा या शिक्षण का खजाना ;श्री मती हरदेवी ,सुपुत्री राय बहादुर कन्हैया लाल ,ओरिएण्टल प्रेस ,लाहौर ,1889 : "इस पुस्तक की लेखिका भारत में स्त्री शिक्षा के प्रति अपने गहन सरोकारों को बेबाकी से रखने के लिए दृढ संकल्प जान पड़ती है ।इनकी पूर्व लिखित पुस्तकें ----सीमंतनी संगीत,विधवा अश्रु,सीमंतनी उपदेश ,लन्दन जुबली,और लन्दन यात्रा सुचिंतित पुस्तकें हैं जो भारतीय स्त्रियों को जगाने और जागरूक बनाने के उदेश्य से लिखी गयी हैं।"[26] पुस्तकों की इस सूची में *सीमंतनी संगीत* तो अब तक अज्ञात है और संभव है कि *विधवा अश्रु* , *स्त्री विलाप* का ही एक और नाम हो ।अस्तु ।

*** *** ***

हरदेवी लन्दन जाने वाली हिन्दी क्षेत्र की पहली स्त्री थीं। उस वक्त अंग्रेजी और हिन्दी के कई पत्रों ने इसे खबर बनाया था । दादाभाई नौरोजी ,रतन बनर्जी ,लक्ष्मीनारायण तथा अपने भाई सेवाराम के परिवार के साथ श्रीमती हरदेवी के लन्दन जाने की खबर *'द इंडियन मैगजीन'* में प्रकाशित हुई थी।[27] लन्दन पहुँचने पर उनके स्वागत की रपट भी द *इन्डियन मैगजीन* में छपी थी,खुशवक्त राय ने इसकी रिपोर्टिंग इन शब्दों में की थी : " इंगलैंड में पांच अप्रेल को दो भारतीय स्त्रियों के आगमन को एक महत्वपूर्ण अवसर मानते हुए हम अपने को आनंदित होने से नहीं रोक सकते ।विक्टोरिया स्टेशन पर उन्हें लेने और स्वागत करने हिन्दुओं,मुसलमानों और अंग्रेजों की एक छोटी सी टोली गयी हुई थी ।

" आनेवालों में पंजाब के श्री सेवाराम उनकी पत्नी, बेटी और उनकी बहन हरदेवी थी ।आगमन की अनिश्चितता के कारण हमलोग जैसा भव्य समारोह करना चाहते थे,नहीं कर पाए ।हिन्दू स्त्रियों का स्वागत शीर्षक देने से मुझे उम्मीद है श्री सेवाराम और लक्ष्मी नारायण यह नहीं समझेंगे कि हमलोग उनका स्वागत

---

[24] **Bipin Chandra Pal,Memories of My Life and Times,UBSPD,New Delhi,Reprint 2004,p.**397

[25] **St.Nihal Singh,A Long Distance Intellectual Companion in Sachchidanand Sinha Commemoration Volume,Prabhu Narayan Gour(ed.),The United Press LTD,Patna,1947,p.**4

[26] इस दस्तावेज के मिल जाने के बाद अब शक की कोई गुन्जाइश नहीं रही कि सीमंतनी उपदेश की लेखिका कौन थी,देखें, द इन्डियन मैगजीन,जुलाई 1889 ,पृष्ठ 316

[27] 'हिन्दू लेडीज़'श्रीमती हरदेवी और श्रीमती सेवाराम के लन्दन पहुँचने तथा स्वागत की सूचना 'द इंडियन मैगजीन' के अंक **181 -182** ,नेशनल इंडियन असोसिएशन ,लन्दन ,**1886** में भी प्रकाशित हुई थी

नहीं कर रहे हैं ।स्त्रियों को प्राथमिकता देने का कारण यह है कि वे उत्तर पश्चिमी प्रांत व पंजाब की प्रथम कायस्थ स्त्रियाँ हैं जिन्होंने समुद्र पार किया है जबकि रौशन लाल,जो कायस्थ जाति के ही हैं लगभग दो वर्ष पूर्व यहाँ आ चुके हैं और इस तरह कायस्थ पुरूष का आगमन कोई नयी चीज नहीं रही ।

" श्री सेवाराम और उनकी बहन श्रीमती हरदेवी राय बहादुर कन्हैया लाल के संतान हैं जो कार्यकारी अभियंता थे और पंजाब के वे पहले ऐसे व्यक्ति थे जो इतने ऊँचे और उत्तरदायित्वपूर्ण पद पर पहुंचे थे और पंजाब का इतिहास लिखकर वे और प्रतिष्ठित हो गए थे।

" पुरानी कहावत है और सच है कि आने वाले दिनों की छायाएं पहले पहुँच जाती हैं ।एक प्रतिष्ठित परिवार की स्त्रियों के इंगलैंड आगमन एक संकेत और भविष्यवाणी है कि जल्द ही पश्चिमोत्तर व पंजाब भी शिक्षा व सामाजिक प्रतिष्ठा के मामले में बंगाल और बंबई के समकक्ष हो जाएगा ।वर्तमान समय में जाति ने कुछ इस तरह जकड़ रखा है कि आसानी से दाएं बाएँ नहीं हिल सकते ।यद्यपि उन्नीसवी शताब्दी ने उन चीजों को भी हासिल कर लिया है जिसकी मनुष्य ने कल्पना भी नहीं की थी और यह समय विश्व इतिहास का एक आश्चर्यजनक काल है जिसकी भविष्यवाणी अन्य चीजों के अलावे यह भी है कि भारत का समय आ गया है और वह सभी क्षेत्रों में प्रगति करेगा।अगर हमलोग अपनी स्त्रियों को यहाँ लाने की नीति अपनाएं और रास्ते में अपने पूर्वाग्रहों के मुखौटों को समुद्र में फेंकते आएं तो जल्द ही भारत में भी हमलोगों और अंग्रेजों के बीच सामाजिक आदान प्रदान आरम्भ हो जाएगा ।" [28]

हरदेवी के जीवन में लन्दन प्रवास एक मोड़ लेकर आया -----न सिर्फ उन्होंने यहाँ पहुँचने की अपनी यात्रा को और महारानी विक्टोरिया के जन्मोत्सव को क्रमश: *लन्दन-यात्रा* और *लन्दन जुबली* में लिपिबद्ध किया बल्कि लन्दन पहुंचते ही स्कूलों की शिक्षण प्रणाली का अध्ययन आरम्भ कर दिया । वे लिखती हैं : " अपने देशवासियों के शिक्षण के प्रति मैं हमेशा बहुत उत्सुक रही हूँ ;लेकिन भारत में शिक्षण संस्थाएं तुलनात्मक रूप से कम हैं और जो हैं भी वे भी ठीक से संगठित नहीं हैं। स्त्री शिक्षा के विकास में हमारे यहाँ की पर्दा व्यवस्था भी कम बड़ी बाधक नहीं है। इसलिए भारत में कन्या विद्यालय अपवाद हैं,सामान्य नियम नहीं ।इसलिए पिछले साल जब मैं यह देश पहुँची तो यहाँ के कन्या विद्यालय देखने के लिए बड़ी उत्सुक थी और अब मुझे इस बात की संतुष्टि है कि मैंने इंगलैंड के कुछ निजी संस्थानों को देखा है ।"[29]भारत लौटकर वे इन अनुभवों को *तालीमे-तिफ्लां* में प्रस्तुत करती हैं।

लन्दन प्रवास की एक और घटना जिसने उनके जीवन को एक मोड़ दिया, एक ख़ूबसूरत मोड़,वह था रोशन लाल से उनका प्रेम ।उन दिनों को याद करते हुए प्रख्यात पत्रकार संत निहाल सिंह लिखते हैं कि, "प्रेम ने उनके युवा ह्रदय में प्रवेश किया था , उनके कानों में परम्परा ने इस कली को खिलने से पहले ही तोड़ डालने के लिए कहा ---- "विधवा के किए प्रेम वर्जित है ,इसकी जड़ों और शाखाओं को उखाड़ डालो "

"वह जानती थी कि एक उच्च कुल की हिन्दू कन्या के लिए ऐसे मामलों में परम्परा कितनी कठोर है।

---

[28]Khuswakt Rai, A welcome to the newly arrived Hindu Ladies in London in *The Indian Magazine*,C.Kegan Paul,London,1886,p.276

[29] An Indian Lady Upon the True Basis of Social Reform, The Indian Magazine, September 1887,p.482

सच्चाई तो यह है कि वह हमारे ईरानी पड़ोसियों,मेद्स और फारसी लोगों से कम निर्दयी नहीं है।
" हरदेवी न तो झिझकी और न घबराई।उसने अपने अन्दर सारी ऊर्जा समेटकर परम्परा को चुनौती देने की ठानी।
" उसने चुनौती दी। सफलतापूर्वक।"[30]
उन्होंने विवाह कर लिया, 21 सितम्बर के अखबारों में इस की खबर छपी : नेशनल इंडियन असोसिएशन की रिपोर्ट थी : " द पंजाब पैट्रियट ने लाहौर के स्वर्गीय राय बहादुर कन्हैया लाल की विधवा पुत्री श्रीमती हरदेवी की श्री रोशन लाल बीए बार-एट लॉ, इलाहाबाद के साथ पुनर्विवाह की सूचना दी। श्री सेवा राम, जिनकी अब मृत्यु हो चुकी है और उनकी पत्नी और बेटी इंग्लैंड गए थे। परिवार कायस्थ समुदाय से संबंधित है। श्रीमती हरदेवी ने अपनी देशवासियों की उन्नति के लिए खुद बहुत मेहनत की है और उन्होंने हाल ही में ज़नाना में प्रचलन के लिए एक उपयोगी शैक्षिक पत्रिका का संपादन भी किया।वह जब इंग्लैंड में थीं तो कुछ समय के लिए छोटे बच्चों को प्रशिक्षित करने के किंडरगार्टन के तरीकों का अध्ययन भी किया, जिस पर उन्होंने बाद में एक पुस्तिका भी प्रकाशित कराई थी ।"[31]
लखनऊ के *हिन्दुस्तानी* में खबर का शीर्षक था : इलाहाबाद के *लाला रोशन लाल बी.ए. बैरिस्टर –एट-लॉ का लाहौर की विधवा श्री मती हरदेवी,सुपुत्री स्वर्गीय राय बहादुर कन्हैयालाल से विवाह।*और आगे खबर यूं छपी *कि* " यूं तो हम विधवा विवाह के हिमायती हैं ,विशेषकर बाल –विधवाओं के लेकिन अभी वह वक्त नहीं आया है जब इस तरह की नई रीति की शुरूआत की जाय;अभी भी लोग सामान्यत: विधवा विवाह का नाम सुनते ही घृणा से मुंह बिचकाने लगते हैं।समाज को धीरे धीरे सुधारा जाता है ,आकस्मिक और बड़े पैमाने पर परिवर्तन करने पर समाज सुधार की प्रक्रिया विकसित होने के बजाय क्षतिग्रस्त ही होती है।लाला रोशन लाल तो बहुत भाग्यशाली थे कि इंगलैंड से वापस लौटने पर हिन्दू धर्म के अनुसार बगैर प्रायश्चित किए उन्हें जाति से वहिष्कृत नहीं किया गया।उन्हें विधवा से विवाह नहीं करना चाहिए था ,विशेषकर किसी दूसरे समुदाय की विधवा से।वे एक सक्सेना कायस्थ हैं जबकि सुश्री हरदेवी भटनागर हैं ;और कायस्थ की इन दो वर्गो में अंतरजातीय विवाह स्वीकृत नहीं है।इस विवाह के कारण अब उनका जातिबाहर होना निश्चित है।सुश्री हरदेवी संस्कृत और अंगरेजी की अच्छी अध्येता हैं और हिन्दी की एक पत्रिका भी निकालती हैं।उनके विवाह के कारण स्त्री शिक्षा के उद्देश्य पर गहरा आघात लगेगा क्योंकि अबोध हिन्दू यह सोचेंगे कि शिक्षा का स्त्रियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।"[32]
यह सच है कि उस वक्त विधवा के पुनर्विवाह की घटना अनहोनी थी, पंद्रह साल बाद भी जिसकी धमक मंद नहीं हुई ,हिन्दुस्तान रिव्यू के एक कॉलम में ---*अ विडो मैरेज इन हाई लाइफ* में -----रिपोर्ट छपी :

---

[30]St. Nihal Singh,ibid,p.3

31.The Indian Magazine and Review,No.264, December 1892,p.660 https://www.google.co.in/books/edition/Examples_of_Indian_Periodicals/Bx2baaaaiaaj?hl=en&gbpv=1&dq=hardevi+roshanlal&pg=RA2-PA10&printsec=frontcover (accessed on 24.12.2022)

[32] फैजाबाद के *हमदर्द* में भी 24 सितम्बर को ऐसी ही धारणा व्यक्त की गयी थी,देखें, **Selections from the Vernacular Newspapers 1890-09-30: Issue 39,p.11**

"लगभग पंद्रह साल पहले यह घोषणा हुई थी कि श्री रोशन लाल ,बार-एट-लॉ ने लाहौर के विख्यात अभियंता स्वर्गीय राय बहादुर कन्हैया लाल की सुपुत्री श्री मती हरदेवी से विवाह कर लिया है।इस खबर ने उत्तर भारत के हिन्दू समुदाय और विशेषकर कायस्थ समुदाय को हिला कर रख दिया था।वस्तुत: यह खबर बम की तरह फूटी थी जिसने समुदाय को लगातार आतंकित किए रही।यहाँ तक कि वे लोग भी जिन्होंने दिल से इस विवाह को स्वीकार कर लिया था, परिस्थितियों के दबाव में इसे खारिज करने को बाध्य हुए।बांकीपुर के कायस्थ गजट जैसे उदारवादी और प्रगतिशील विचारों के पोषक भी रोशन लाल के विरूद्ध जोरदार अभियान चलाने से नहीं हिचके थे।[33] बरेली निवासी रोशनलाल (1858-1932)लन्दन से 1887 में बैरिस्टरी की पढ़ाई करके भारत लौटे और उसके एक साल के बाद 1888 में हरदेवी भी लन्दन से लौटी,जब उन्हें पिता कन्हैया लाल की अचानक मृत्यु की खबर मिली। उस समय लाहौर में माता-पिता के अलावे घर के चारो सदस्य ----हरदेवी,उनके बड़े भाई सेवाराम,भाभी और भतीजी राधिका लन्दन में थे ,सभी तत्काल लौट आए।सेवाराम और उनकी पत्नी की लन्दन में बार-एट-लॉ की पढाई अभी पूरी नहीं हुई थी ,इसलिए अंत्येष्टि के बाद वे लोग फिर वापस चले गए।हरदेवी माँ के साथ लाहौर में ही रह गईं। एक साल के बाद भाई लौटे लेकिन अचानक उनकी कलकत्ते में मृत्यु हो गयी।[34]वे हरदेवी के सिर्फ बड़े भाई ही नहीं थे बल्कि उनके सच्चे हितैषी ,मार्गदर्शक और मित्र थे ,उनके कई लेखों को उन्होंने अंगरेजी में रूपांतरित कर इन्डियन मैगजीन में प्रकाशित करवाया था[35] ,यही नहीं पिता की राय के खिलाफ जाकर उन्होंने रोशनलाल से उनके विवाह के प्रस्ताव को समर्थन किया था। सेवा राम की मृत्यु के बाद उनकी एकलौती पुत्री राधिका देवी (1880-1919)का विवाह 1894 में श्री सच्चिदानंद सिन्हा(1871- 1950)से हुई जो आगे चलकर आधुनिक बिहार के निर्माताओं में एक माने गए।हरदेवी जब तक जीवित रहीं सच्चिदानंद सिन्हा प्राय:हर वर्ष छुट्टियों में उनसे मिलने लाहौर आते थे।यह सिलसिला 1919 में राधिका देवी[36] की मृत्यु के बाद भी जारी रहा।वे हरदेवी का अत्यंत सम्मान करते थे और उनके कामों की खुलकर प्रशंसा करते थे।[37] बहरहाल, लन्दन से 1887 में लौट कर रोशनलाल सक्सेना ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में

---

[33] **Sachchidanand Sinha(ed.),The Hindustan Review,April 1906,p.356**

[34] **" पिछले साल इन्हीं महीनों के शुरू में हमलोगों ने लाहौर की कायस्थ महिला श्रीमती सेवा राम और उनके साथ नेशनल इन्डियन एशोसिएशन के मानद सचिव ई.ए. मैनिंग्स.के एस.एस.पेनिनसुलर जहाज से इंगलैंड जाने की खबर छापी थी और आज बेहद शोक के साथ उनके पति श्री सेवा राम बी,ए,,बैरिस्टर –एट लॉ के कलकत्ता में ,जहां वे कुछ दिनों के लिए आए हुए थे,आकस्मिक और असामयिक मृत्यु की यह सूचना देनी पड़ रही है।" देखें ,The Bombay Gazette,Monday,March 24,1890**

[35] देखें, **An Indian Lady Upon The True Basis Of Social Reform,The Indian Magazine,Issue 193-204,pp.482-487**

[36] **राधिका देवी अपनी बुआ हरदेवी की तरह सामाजिक उत्थान के हर काम में शामिल होती थी और बुआ के हर परियोजना में शरीक रहती थी ---शिल्पालय में पांच रूपये प्रति माह का योगदान हरदेवी का होता था तो राधा बीबी भी पांच रूपये प्रति माह योगदान करती थी ;यही नहीं उन्होंने इलाहाबाद के कायस्थ पाठशाला और लाहौर विश्वविद्यालय के विकास के लिए पच्चास पचास हजार रूपए का सहयोग किया था और पटना के राधिका सिन्हा इन्स्टीट्यट और सिन्हा लाइब्रेरी को डेढ़ लाख रूपये की राशि भेंट की थी। देखें,बागीश्वर प्रसाद सिन्हा, सच्चिदानंद सिन्हा,पब्लिकेशन डिवीजन,दिल्ली,रिप्रिन्ट 2003,पृष्ठ 26**

[37] **सच्चिदानंद सिन्हाने 'कायस्थ समाचार'के अप्रैल ,1902 के अंक में लिखा –" इन स्तंभों में हम पहले भी किसी अवसर पर एक सुशिक्षित और अत्यंत प्रतिभाशाली स्त्री के रूप में ख्यात श्रीमती हरदेवी रोशनलाल के उन उत्कृष्ट और अत्यधिक उपयोगी कार्यों की ओर ध्यान खींच चुके हैं,जो उन्होंने अपनी पत्रिका 'भारत भगिनी' के जरिये 'स्त्री शिक्षा'के लिए किया है ,जो हर माह देवनागरी लिपि में प्रकाशित होती है। इस देश के उद्धार और स्त्री शिक्षा के उद्देश्यों**

वकालत शुरू की ।वे अपने स्कूल के दिनों से ही आर्यसमाजी थे ।वे समाज सुधारक भी थे ,मद्य –त्याग और गो-रक्षा के लिए व्याख्यान भी देते थे,प्रांत से बाहर भी उनके कई संपर्क सूत्र थे विशेषकर लाहौर के हिन्दू सभा से । इलाहाबाद में अमेरिकी जनाना मिशन के वे कटु आलोचक थे और संभवत:इसलिए कन्या उच्च विद्यालय की स्थापना में उन्होंने वहां बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया था ।[38]विवाह के बाद वे लाहौर में ही रहे । आर्य लेखक कोष के अनुसार,1896 में परोपकारिणी सभा के सदस्य चुने गए ।वे आर्यसमाज बच्छोवाली लाहौर के प्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री एवं उप प्रधान भी रहे।उन्होंने दो पुस्तकें भी लिखीं----*अ फिन्गरपोस्ट टू द रेलिजन ऑफ द वेदाज* और *स्ट्रे थॉट्स ऑन द आर्य समाज* ।[39] वे आर्य समाज के सिद्धांतों के प्रति पूर्णरूपेण कटिबद्ध थे ----यहाँ तक कि सहवास सम्मति के मसले पर ब्रह्म-समाजी पत्नी हरदेवी के ज्ञात और समर्थित मत के विरूद्ध जाकर सरकार के इस बिल का उन्होंने विरोध किया था ।[40] महर्षि दयानंद सरस्वती की प्रसिद्ध रचना सत्यार्थ प्रकाश के अंग्रेजी अनुवादक दुर्गा प्रसाद ने रोशनलाल को 1908 में कृति को समर्पित करते हुआ लिखा है: "प्रथम और सर्वप्रमुख कायस्थ सामाज सुधारक राय रोशन लाल साहिब,बी.ए. बार-इट-लॉ,लाहौर ,पंजाब,आर्य समाज के सच्चे दोस्त जिनकी सदाशयता और भद्रता सभी मित्रों को बहुत भाती है और भारत के समाज सुधार के प्रति उनकी अनुरक्ति सर्व विख्यात है। महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती की पुण्य स्मृति में उनकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण कृति सत्यार्थ प्रकाश की अंगरेजी *अनूदित* कृति को प्रकाशित करने के लिए दिए गए ऋण के लिए अनुवादक कृतज्ञता ज्ञापित करता है।"[41] लेकिन यह भी ज्ञात है कि एक भटनागर कायस्थ विधवा हरदेवी से विवाह करने के कारण उन्हें जाति से बाहर कर दिया गया जबकि कुछ दिन पहले उनकी समुद्र यात्रा को अनदेखी कर दिया गया था ।[42]लाहौर के उन दिनों को याद करते हुए संत निहाल सिंह ने लिखा है कि "विवाहोपरांत हरदेवी और रौशन लाल लाहौर में ही बस गए और वहीं सामाजिक जीवन में सक्रिय भूमिका निभाने लगे"रायबहादुर कन्हैया लाल ने अपने घर के पास ही हरदेवी के लिए एक अलग मकान बनवाया

के प्रति उनके महान समर्पण और सच्ची सहानुभूति के एक अगले उदाहरण के रूप में हमारे सामने अब लाहौर का 'नारी शिल्पायन' उपस्थित है। ...हम इस शिल्पायन की ऑनरेरी सेक्रेटरी श्रीमती रोशनलाल को शुभकामनायें देते हैं ,जो अपने सुपरिचित जोश और ईमानदारी के साथ हर दिन विद्यालय की देखभाल करने और अध्यापन का कार्य करने के लिए भी राज़ी हुई हैं।" देखें, द कायस्थ समाचार ,अप्रैल ,**1902 ,**पृष्ठ **436 -437**

[38] **Quoted in C,A. Bayly,The Local Roots of Indian Politice,Allahabad 1880-1920,Clarendon Press,Oxford,Great Britain, 1975,pp.116-117**

[39] डॉ.भवानी लाल भारतीय,आर्य लेखक कोश,दयानंद अध्ययन संस्थान ,जोधपुर ,प्रथम संस्करण,1991 ,पृष्ठ 245-246

[40] देखें, लूसी करोल स्टाउट,वही,पृष्ठ 657

[41] **The first and foremost in Kayesth Social Reform To Rai Roshan Lal Sahib, B. A.Barrister-at-Law, Lahore, Punjab, and a true friend of the Arya Samaj, whose charitableness of disposition and suavity of manners render him very amiable to all his friends and whose earnest zeal and sincere love of Indian Reformation is so well known to all, is this humble tribute to the sacred memory of Maharishi Swami Dayanand Saraswati in the shape of an English Translation of the Satyarth Prakash, the masterpiece of his works, dedicated as a token of gratitude For his lending a large sum of money to bring out this book without any security whatever on the recommendation of Babu Gopal Chander, B. A. Pleader, Lahore, by the Translator Durga Prasad, Lahore 1908**

[42]**Quoted in C,A. Bayly,ibid,** हिन्दुस्तानी,(लखनऊ),21 सितम्बर 1890

था जिसमें विवाह के बाद रोशनलाल के साथ वे रहने लगी ।जल्द ही यह जगह युवाओं के मिलने-जुलने की जगह बन गयी---विशेषकर कालेज के उन विद्यार्थियों के लिए जो अपने को प्रोग्रेसिव मानते थे और मैं भी उनमें एक था। हरदेवी हमलोगों के लिए नायिका थी।

"यहाँ इस बात की विवेचना का अवसर नहीं है कि एक उच्च कुल कन्या को उस युवक को अपने हाथ सौंपने के पहले किन मानसिक संघर्षों से गुजरना पड़ा होगा ।रोशन लाल के मन में मानो कोई द्विधा नहीं थी,उनके लिए पूरे संसार में सिर्फ एक ही स्त्री वास करती थी और वह थी हरदेवी,जिससे उन्होंने लखनउ में आर्य समाज की विधि से 1891 में विवाह कर लिया था ,वह ताउम्र उनके लिए पूरी दुनिया बनी रहीं। 1926 में हरदेवी की मृत्यु[43] के बाद वे 1932 तक जीवित रहे।"[44]

भारत ,विशेषकर लाहौर के सार्वजनिक जीवन में हरदेवी की सक्रियता ताउम्र रही। राजनैतिक से ज्यादा सामाजिक मुद्दों को ज्यादा अहमियत देने के कारण उनमें स्पष्टत:औपनिवेशिकता विरोधी चेतना की अभिव्यंजना का अभाव है बल्कि कहीं कहीं ब्रिटिश शासन व रानी विक्टोरिया का गुण-गान ही है लेकिन ऐसा भी प्रमाण मिलता है कि हरदेवी क्रांतिकारियों की सहायता करती थीं।[45] यही नहीं बल्कि आपराधिक खुफिया विभाग के एक रिपोर्ट में गैब स्त्रियों के पंजाब में अति सक्रिय होने की बात कही गयी थी तो उसमें सरला देवी और हरदेवी का नाम सर्वाधिक उल्लेखनीय बताया गया था।[46] लेकिन यह तय है कि उन्होंने स्त्री से जुड़े सामाजिक मुद्दों को ही अपना सर्वाधिक समय दिया था । यह सच है कि स्त्री प्रश्न को जिसने भी जिस मंच से उठाया हो ,चाहे उसकी विचारधारा कुछ भी हो,हरदेवी ने उसका समर्थन किया और लाहौर आने पर उनका स्वागत किया ----चाहे वह लेडी डफरिन(1843 -1936)हों या मिस मेंनिंग हों,या शिवनाथ शास्त्री व उनकी पुत्री कामिनी राय। वायसराय लार्ड डफरीन की पत्नी लेडी हेरियोट डफरीन ने भारत के स्त्री स्वास्थ्य के क्षेत्र में अतुलनीय काम किया था , उसके लिए एक स्त्री शिष्ट मंडल उनके सरकारी आवास पर जाकर उन्हें प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया था ;इस शिष्ट मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सेवा राम थीं और सचिव हरदेवी, जिन्होंने वहां प्रशस्ति पत्र पढ़ा था।[47] हरदेवी ने अपने घर पर भी दिसंबर 1888 में लेडी डफरिन के सम्मान में एक सभा आयोजित की थी जिसमें डेढ़ सौ पर्दानशीं औरतों ने भी हिस्सा लिया था और प्रेस

---

43 हरदेवी 1930 के सत्याग्रह आन्दोलन में शरीक थीं ,ऐसा उल्लेख एक पुस्तक "वीमेन चीफ मिनिस्टर इन इंडिया'में आया है लेकिन इसका सत्यापन किसी और सन्दर्भ से नहीं किया जा सका है जबकि संत निहाल सिंह ने हरदेवी की 1926 में मृत्यु की बात सच्चिदानंद सिन्हा स्मारक ग्रन्थ में तब कही जब सच्चिदानंद सिन्हा जीवित थे इसलिए इस पर ज्यादा भरोसा होता है।

44 **St.Nihal Singh,ibid,p.6** & 4

45 ***Har Devi, wife of Roshan Lal, Barrister of Lahore, who was a great social reformer and editor of a Hindi Magazine 'The Bharat Bhagini', also joined the ranks of the political workers. She arranged meetings and collected funds for the purpose of assisting anarchists under trial. See,*** **Manmohan Kaur,** ***Role of Women in the Freedom Movement*****, 1857-1947, Sterling Publishers, New Delhi,1968, p. 98**

46 **See, Mohinder Singh(ed.),History and Culture of Punjab, Atlantic Publishers and distributors, New Delhi,1989,p.248**

47 **The Indian Magazine, March 1989,p.89**

ने जिसे लाहौर में अपने ढंग की पहली सभा घोषित किया था।[48]इसी प्रकार इलीजाबेथ एडिलेड मेन्निंग (1828-1905), जिन्होंने मेरी कर्पेंतियर(1807-1877) की मृत्यु के बाद नेशनल इन्डियन एशोसिएशन को एक नई ऊँचाई तक ले गयी थी,जब भारत दौरे पर आई, लाहौर में श्रीमती सेवाराम और हरदेवी ने अपने घर पर उनका स्वागत किया था।[49] हिन्दू विडो के अनुवादक 'एन इंगलिश लेडी' संभवत:यही थीं।इसी प्रकार जब शिवनाथ शास्त्री अपनी पुत्री कामिनी सेन के साथ लाहौर पहुंचे तो स्टेशन पर उनके स्वागत करने वालों में हरदेवी अपने भाई सेवाराम और भाभी के साथ मौजूद थीं । ट्रिब्यून के अनुसार,"पंडित जी को स्टेशन पर स्वागत करने वालों में कई ब्राह्मण और श्री सेवा राम के अतिरिक्त कई मित्र मौजूद थे।स्त्रियों का स्वागत करने वालों में श्रीमती सेवाराम और हरदेवी के अलावे कई पंजाबी और बंगाली स्त्रियाँ उपस्थित थीं ।"[50]बेहरामजी मेरवानजी मालाबरी(1853-1912) के *नोट्स ऑन इन्फेंट मैरेज एंड एन्फोर्स्ड विडोहुड* पर जब चर्चा का बाजार गर्म था ,उन्होंने उसपर बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया और सरकार ने जब सहमति से सहवास की उम्र दस से बारह वर्ष बढ़ा दिया तो शुक्रिया अदा करते हुए उन्होंने कहा कि वे वर्षो से सरकार को बाल-विवाह रोकने की गुजारिश करती रही हैं और आज जब यह विधेयक क़ानून बन गया है, वह अत्यंत प्रसन्नता महसूस कर रही हैं।[51] राष्ट्रीय सामाजिक सम्मलेन के अधिवेशनों में भी वे शुरू से ही सक्रिय रहीं और जब लाहौर में चौदहवाँ सम्मलेन 1900 में हुआ तो वे स्त्री शिक्षा के मसले को जोरदार ढंग से उठाया।इस सम्मलेन के रिपोर्ट में कहा गया है कि, " यूं तो लाला सुन्दर सूरी ,हंसराज ,शिव दयाल ,रूची राम,लाजपत राय ,बिशन नारायण राजदान ,दीवान नरिंदर नाथ और मुंशी राम के भाषण अच्छे थे लेकिन रोशन लाल की प्रतिभाशाली पत्नी श्रीमती हरदेवी का भाषण लाजवाब था।उन्हें सम्मलेन का पहला प्रस्ताव, जो स्त्री शिक्षा पर था, प्रस्तुत करने की जिम्मेवारी दी गयी थी और उन्होंने स्त्री -शिक्षा की अवहेलना करने के लिए पुरूषों को खूब शर्मसार किया ।हमलोगों को यह उम्मीद नहीं थी कि वे इतने बेहतरीन ढंग से बोल पाएंगी ।रोशन लाल एक अच्छे वक्ता हैं और स्वागत समिति के अध्यक्ष के नाते उन्होंने अपनी भूमिका बखूबी निभाई भी लेकिन हमें यह गर्व के साथ स्वीकार करना चाहिए कि वे अपनी पत्नी के सामने पूरी तरह से निष्प्रभ हो गए थे ।इस प्रभावशाली युगल को हमारी बधाइयां ।समाज-सुधार के व्यावहारिक प्रचार के कारण इन्हें अक्सर प्रताड़ना और कठिनाइयों का जो सामना करना पडा, वह नई पीढी को प्रोत्साहित करता रहेगा ।वे हमलोगों के बीच लम्बे समय तक अपने उपयोगी काम को जारी रखें ,यही हमारी प्रार्थना है ।"[52]
नारी-जागरण के क्षेत्र में हरदेवी बीसवीं सदी के आरम्भ तक इतनी लोकप्रिय हो चुकी थीं कि सुदूर आन्ध्र की प्रथम स्त्री इतिहासकार मानी जाने वाली बन्दारू अच्चामम्बा (1874-1904) ने उल्लेखनीय भारतीय स्त्रियों की जीवन-माला *अबला सच्चरित्र रत्नमाला*(1901) की रचना की तो इसमें उन्हें शामिल करना

---

48 The Indian Magazine, December1888,p 658
49 The Indian Magazine ,March 1989,p.167
50 The Indian Magazine,December 1889,p.656
51 Indian Magazine, June 1891,p.322
52 Report of the fourteenth National Social Conference,Lahore,1900

जरूरी समझा ।[53] बाद के दिनों में वे सरला देवी के भारत स्त्री महामंडल(1910) के साथ साथ स्वदेशी आन्दोलन में भी हिस्सा लेने लगी । महात्मा गांधी ने जुलाई -नवम्बर 1920 के *यंग इंडिया* में लिखा : "बंबई से लाहौर पहुंचकर श्रीमती सरला देवी चौधरानी ने जो स्वदेशी से सम्बंधित गतिविधियाँ की हैं,उसकी रिपोर्ट भारत स्त्री महामंडल की पंजाब शाखा के संयुक्त सचिव ने भेजी है ।सचिवों ---- श्रीमती राय और श्रीमती रोशनलाल के अनुसार लाहौर में तीन भिन्न भिन्न जगहों पर 23, 24 और 25 जून को स्त्रियों की सभाएं आयोजित हुई।"[54] अब भारतीय इतिहास एक दूसरे चरण में प्रवेश कर रहा था --- सरकार से सहयोग करते हुए विधेयक क़ानून के सहारे सामाजिक परिवर्तन करने के बजाय असहयोग और सविनय अवज्ञा की राजनैतिक कार्यनीति सफल होने वाली थी,गांधी के कांग्रेस में सामाजिक सम्मलेन की कार्यावलियाँ समाहित हो गयी थीं ;आश्चर्य नहीं कि इस दौर के दस्तावेजों में हरदेवी जैसे लोगों की आवाजें अब कम सुनाई पड़ने लगती है,संभवत:उन लोगों की भूमिका पूरी हो चुकी थी ।

*** *** ***

हरदेवी ने *सीमंतनी उपदेश* में स्त्री-उद्धारक के रूप में चार महापुरूषों का आभार व्यक्त किया है :मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी(1809-1882),पंडित शिव नारायण अग्निहोत्री(1850 –1929), नवीन चन्द्र राय (1837 -1890)और स्वामी दयानंद सरस्वती (1824 –1883); लेखिका कहती है कि *तमाम हिन्दुस्तान की स्त्रियों को चाहिए कि उनका शुक्र अदा किया करें बल्कि उनको बराए-खुदा औतार(अवतार)मानें ..*[55] क्या ये चुनाव लेखिका की निजी पसंद के परिचायाक हैं या स्त्री के हक़ की लड़ाई को ध्यान में रखकर संभावित किसी कारगर युद्धनीति के संकेतक हैं?

उन्नीसवीं सदी का भारत बेचैनी से आलोड़ित भारत था ----- तरह तरह की समस्याएँ, तरह तरह के समाधान ,वाद-विवाद,तर्क-वितर्क के घटाटोप से घिरा हुआ । सृजन के क्षण ऐसे ही होते हैं । केनेथ डब्ल्यू जोन्स ने अपने अध्ययन में दिखलाया है कि पश्चिमोत्तर समाज और ब्रिटिश औपनिवेशिक संस्कृति के संसर्ग ने कैसे हासिए के लोगों की एक तीसरी दुनिया का निर्माण किया था, जिसकी शुरूआत दिल्ली में उन्नीसवी सदी के तीसरे और चौथे दशक में हो गयी थी लेकिन सत्तावन के विद्रोह ने उसे असमय ही रोक दिया था; साठ और सत्तर के दशक में फिर जिसे पंजाब में आगे बढाया जा सका ----कन्हैया लाल अलखधारी के माध्यम से ।लेकिन यह अकेला स्वर था ,एक ऐसे भविष्य के मसीहा का,जो अभी आया नहीं था ।आठवें दशक के पहले पंजाब ने वैसे हाशिए के लोगों की पहली पीढी तैयार नहीं की थी जो परिवर्तन गामी अंगरेजी पढ़ा लिखा युवा वर्ग था ----जो एक साथ ही सांस्कृतिक हाशियापन और शिक्षा प्रेरित अलगाव झेल रहा था। वे नए विचारों की तलाश में थे और उन्हें यह ब्राह्मो समाज ,देव धर्म और

---

[53] देखें,सूसी थारू और के.ललिता(एडिटर्स) ,वही,पृष्ठ 324

[54] स्वदेशी इन द पंजाब,द कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी,**XVIII**,जुलाई -नवम्बर 1920 ,पब्लिकेशन्स डिवीजन ,भारत सरकार,दिल्ली,1965,पृष्ठ 20

[55] हरदेवी,सीमंतनी उपदेश,पृष्ठ 43

आर्य समाज में मिला।"[56] कन्हैया लाल अलखधारी के बारे हरदेवी ने अपनी पहली रचना स्त्री विलाप में लिखा है: " मेरे मन में जब अलखधारी समाया,गई सिर से मेरे उतर प्रेत छाया।मनो मन में अब ज्ञान का भानु प्रगटा ,गई प्रेत महिमा महातिमिर निघटा।"[57] यह अलखधारी ही थे जिन्होंने हरदेवी की सीमंतनी उपदेश को प्रकाशित भी करवाया था। हरदेवी का ब्राह्मो समाज और आर्य समाज से भी निकट का सम्बन्ध था ,पंडित शिवनारायण अग्निहोत्री भी पहले ब्राह्मो समाज के मुखर सदस्य थे , बाद में कुछ निजी और कुछ विचारधारात्मक वजहों से एक अलग देव धर्म की स्थापना की ।लाहौर में ब्राह्मो समाज के संस्थापकों में एक बाबू नवीनचंद्र राय और उनकी पुत्री हेमंतकुमारी चौधरानी से हरदेवी के निजी पारिवारिक से सम्बन्ध थे और इसका भी विवरण मिलता है कि समुद्र-यात्रा के दंडस्वरूप बड़े भाई सेवाराम को जब जाति से बहिष्कृत किया गया तो वे भी ब्राह्मो समाज में दाखिल हो गए थे[58] और पति रोशन लाल तो घोषित आर्यसमाजी थे ही,इस प्रकार पश्चिमोत्तर प्रांत में परिवर्तनकामी सुधारवादी धारा से हरदेवी का निकट सम्बन्ध था और यह आकस्मिक नहीं है कि हरदेवी का सम्पूर्ण लेखन और जीवन, सनातनी जीवन-दृष्टि के प्रतिपक्ष में खड़ा दिखाई पड़ता है।

पश्चिमोत्तर प्रांत में सनातनी जीवन-दृष्टि के प्रतिनिधि स्वर श्रद्धा राम फुल्लौरी (1937-81) थे । कन्हैया लाल अलखधारी से बहस करते हुए श्रद्धा राम कहते हैं कि हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए परिश्रम किया जावे तो यथार्थ है पर रक्षा वह पुरूष कर सकते हैं कि जो पहले आप पक्के हिन्दू बन लें, यद्यपि हम सब मनुष्य हिन्दूपन के दावेदार हैं,तथापि पक्का हिन्दू वह होता है कि जो श्रुति और स्मृति की आज्ञा को सत्य व यथार्थ समझे। यदि वेद और धर्म्म शास्त्र की आज्ञा को ब्राह्मणों की बनावट समझ के किसी और सूक्ष्म बात को हिन्दू धर्म मान रखा हो तो वह हिन्दू नहीं हो सकता,जैसा कि अपराध क्षमा हो मैं एक बात कहता हूँ कि जिस दशा में अलख धारी साहिब आप श्रुति स्मृति के विरूद्ध न अपने सिर पर चोटी रखते और न गले में यज्ञोपवीत जो वैश्य लोगों को अवश्य चाहिए और गोबर का चौका देने से घृणित होकर मेज बिछा के भोजन का नाम खाना बोलते,और छूत छात जाति पाति आदिक को व्यर्थ समझते हैं तो उनके पुरूषार्थ से हिन्दू धर्म्म की वृद्धि होना क्योंकर संभव है?फिर उनकी तसनीफात में अधिकतर यह बातें भरी हुई हैं कि कृष्णचंद्र रामचंद्र आदिक अवतारों और ब्रह्मा विष्णु आदिक देवताओं गंगा यमुना आदिक तीर्थों और मूर्तियों को पूजना मूर्खता है और क्षयाह और दान-यज्ञ आदिक सब ब्राह्मणों ने संसार को लूटने खाने की विधि बना रक्खी हैं। फिर वह जूता पहन के मुसलमान और इसाई लोगों के सामने वेद और शास्त्र की कथा सुनना चाहते हैं और किसी दूसरे मनुष्य के माथे पर लगे हुए तिलक को भी सहार नहीं सकते तो वह हिन्दू धर्म की रक्षा कैसे कर सकते हैं?[59]श्रद्धा राम ने तर्क की इसी सनातनी प्रणाली से पंजाब में सुधारवादियों--

---

[56] **Kenneth W Jones, Arya Dharm, Hindu Consciousness in 19th Century, Punjab, Manohar, Delhi, Reprint 2006,pp313-314**

[57] हरदेवी,स्त्री विलाप,आर्य दर्पण प्रेस, शाहजहाँपुर,संवत १९३८ (1881),पृष्ठ 2

[58] बिपिन चन्द्र पाल ,वही

[59] तुलसी देव,श्रद्धाप्रकाश,प्रथम भाग,पंजाब एकोनोमिकल प्रेस,लाहौर ,1896 ,पृष्ठ 30

---ब्रह्मा समाज के संस्थापक बाबू नवीन चन्द्र राय[60] और आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद[61] से लोहा लिया!सनातनियों और सुधारवादियों का यह संघर्ष वस्तुत: आस्था बनाम विवेक ,परम्परा बनाम आधुनिकता का संघर्ष बन गया था ।जिस कन्हैया लाल अलखधारी पर श्रद्धाराम उपर्युक्त आरोप लगाते हैं ,वे ही 'औरतों के वास्ते बेहितर समझ के' *सीमंतनी उपदेश* जैसी रचना छपवाते हैं और जिन के लिए हरदेवी कहती हैं, *कन्हैया लाल अलखधारी जिसका एक लफ्ज भी इन्साफ से खाली नहीं ।बहुत किताबें और रिसाले लिखे।कोई किताब ऐसी नहीं जिसमें इन कैदनों की रिहाई की दलील नहीं।*[62] यह सच है कि सनातनी सोच कैदनों की रिहाई के बजाय उन्हें बेड़ियों को बेड़ी न मानकर उनसे फूल मानने का उपदेश देता रहा है, हरदेवी कहती हैं, "हिन्दुओं के महाभारत,मनुस्मृति वगैरह में स्त्रियों के वास्ते सिवा पति के और किसी तरह का पुण्य भजन नियम नहीं लिखा ।वेदव्यास ,पराशर,वशिष्ठ ,मार्कंडेय,याज्ञवल्क्य ,वाल्मीकि,और सबने स्त्रियों के वास्ते पतिव्रता धर्म ही मुख्य रखा है ।ईश्वर की पूजा उपासना भक्ति सब स्त्रियों को पति सेवा से मिलती है। जो सिद्धि ऋषि लोग बड़ी तपस्या करके पाते हैं वह इसको पति सेवा से मिल जाती है ..."[63] यह जानना दिलचस्प है कि भारतेंदु युग के लगभग सभी पुरूष साहित्यकार इसी मत के कायल हैं ।प्रताप नारायण मिश्र (1856-1894)तो स्त्रियों को पतिव्रत का पाठ पढ़ाने के लिए इतने उत्सुक हैं कि कहते हैं, "स्त्रियाँ अभी विशेषत: मूर्ख हैं। अत:साम,दाम,दंड,भेद से काम लेना ठीक होगा ।निरे न्याय और धर्म से वे राह पर न आवेंगी ।ऐसी युक्ति से बरतना चाहिए कि वे प्रसन्न भी रहें और कुछ डरती भी रहें ।तभी प्रीत करेंगी ।कनौजियों की तरह निरी डंडेबाजी से वे केवल डर सकती हैं ,प्रीति न करेंगी ।अगरवालों ,खत्रियों की भाँति निरी स्वतंत्रता सौंप देने से भी वे सर चढ़ेंगी ।अत:भय और प्रीति दोनों दिखाना ,स्वतन्त्र ,परतंत्र दोनों बनाए रहना ।मौके 2 से उन्हें अनुमति और शिक्षा भी देते रहना,और कभी 2 उनकी सलाह भी लेते रहना ।बस इन उपायों से संभव है कि भारत कन्याएं पुन: पतिव्रत की ओर झुकने लगेंगी और पतिव्रताओं के प्रभाव से फिर हमारी सौभाग्य लक्ष्मी की वृद्धि होगी ।"[64] अब इस पर कोई टिप्पणी करना बेकार है लेकिन देखिए इस मुद्दे पर हरदेवी क्या कहती थीं :" यह पतिव्रता धर्म नहीं,खुद –मतलबी-धर्म है ।बेवकूफ से जो कहो करता है और जिस तरह कहो मानता है ।तिस पर पतिव्रता धर्म के वाइस इन्हें किसी तरह का इनकार नहीं क्योंकि इस धर्म का मतलब यही है ---खाविंद जो कहे मानना ।अगर कहे,कुएँ में गिरो फ़ौरन गिर पडो।...यह खुद-मतलबी –धर्म है।आप जो चाहें सो करें ।इन्हें खाविंद के मरे पर भी इसी धर्म को रुलाए ।आप रंडी लौंडों की बगल में आराम करें;इन्हें पंडित जी से धर्म का महात्मय सुनवाएं ।[65] यह तर्क और ये तेवर---- जाहिर है कि हिन्दी साहित्येतिहासकारों को यह रास नहीं आ सकता था

---

60 वही,देखें,धर्मरक्षा ,पृष्ठ 118

61 देखें,वही,पृष्ठ 55 -58

62 सीमंतनी उपदेश,पृष्ठ 44

63 वही,पृष्ठ 105

64 विजय शंकर मल्ल(सम्पादक),प्रतापनारायण –ग्रंथावली,खंड एक,नागरी प्रचारिणी सभा,वाराणसी,1992 ,पृष्ठ 134

65 सीमंतनी उपदेश,पृष्ठ 107

!रुखमा बाई(1864-1955) के मामले में वैसे भी भारतेंदु युग के पुरूष साहित्यकारों ने अपना रूख साफ़ कर दिया था।अधिकाँश हिन्दी लेखक इस मामले में तिलक जैसे लोगों के पक्ष में थे,रानाडे ,भंडारकर,गोखले के साथ नहीं ।[66] अजब नहीं कि हरदेवी को समुचित महत्त्व नहीं मिला । भारतेंदु युग पर बात करते हुए शायद ही किसी ने स्त्री रचनाकारों या हरदेवी को उल्लेखनीय माना हो ।हिन्दी साहित्य के अनगिनत इतिहास लिखे गए हैं ,उनमें भारत भगिनी के सम्पादक के रूप में हरदेवी का नाम भले ही कहीं –कहीं दिख जाए लेकिन वह क्या लिखती थी,उनके क्या सरोकार थे,यह पता लगाना मुश्किल है ।रामविलास शर्मा ने जरूर यह कृपापूर्वक लिखा है कि, “ स्त्री शिक्षा के अभाव में स्त्रियों का लेखिका बनना तो स्वप्नवत था,फिर भी प्रयाग से एक बैरिस्टर की धर्म पत्नी श्री हरिदेवी ने ‘भारत भगिनी’ नाम की पत्रिका निकाली जो राधाकृष्ण दास के हिन्दी पात्रों पर पुस्तक लिखने के समय तक निकल रही थी ।श्री हरिदेवी ‘भारतेंदु’ आदि दूसरे पत्रों में भी लिखती थी और अपने समय की एक सुलेखिका थी ।”[67] यहाँ लेखिका के अशुद्ध नाम की बात को ---शेक्सपियर के अंदाज में कि नाम में क्या रखा है!----छोड़ भी दें तो भी प्रश्न उठता है कि हरदेवी क्या लिखती थी,यह बताना या इसका कोई विवरण देना आलोचक ने कहीं भी आवश्यक नहीं समझा, क्यों? क्या हरदेवी का लेखन इतना नगण्य था ? इतिहास से औरतों की गुमशुदगी कहीं इसी तरह तो नहीं होती है?

***　　　　***　　　　***

हरदेवी का अधिकाँश लेखन गद्य में हुआ है,कुछ कविताएँ ----ग़जल और पद के शक्ल में--- उनकी गद्य कृतियों में ही आई हैं लेकिन वह उनकी काव्य-प्रतिभा के निदर्शन के लिए पर्याप्त हैं। गद्य में जो बातें तार्किक ढंग से रखी गयी हैं उसे कविता में मानो सार रूप में पकड़ा गया है ।लेखिका ने साहित्यिक हिन्दी की सभी प्रयुक्तियों (रेजिस्टर्स) ------ब्रजभाषा,खड़ी बोली हिन्दी और उर्दू का गद्य और पद्य दोनों में साधिकार प्रयोग किया है। यह भारतेंदु –काल की सामान्य विशेषता कही जा सकती है लेकिन कवयित्री हरदेवी की विशेषता यह है कि वे इसे एक स्त्री-जन्य अनुभव के अभिव्यंजना-विशेष का वाहक बना देती हैं,साथ ही साथ नूतन अंतर्वस्तु के सहारे पारंपरिक रूप का भी पुनराविष्कार करती हैं ।उनकी पहली कृति ***स्त्री विलाप* (1881)**के भजन की कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं :

हो प्रभु अब करो पार ।।
निरदया हिन्द सिंध में बेड़ा डगमग होत हमार ।

---

66 बाल गंगाधर तिलक जैसे राष्ट्रवादी हिन्दू समाज को सुधारने के लिए अंग्रेजो से क़ानून बनाने की अपील को गलत मानते थे ,इसे वे हिन्दू धर्म के आतंरिक मसले में बाहरी हस्तक्षेप की तरह देखते थे ; इसलिए रुखमा बाई ने जब बाल विवाह के पति को अमान्य करने के लिए अदालत का सहारा लिया ,तिलक ने उसका विरोध किया ।विस्तार के लिए देखें,सुधीर चन्द्र, रखमा बाई:स्त्री अधिकार और क़ानून,राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली 2012

67 रामविलास शर्मा,भारतेंदु युग,विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा,तृतीय संस्करण,1956,पृष्ठ 29

भारत अविद शशि सम ग्रस्यो,कौन छूटावन हार ।
काम लहर अति ही नियरानी ,छिन छिन होत अपार ।
क्रोध पवन पल इस्थिर नाहीं ,लोभ घुमड़ जल धार ।
मोह मगर मर्याद छाड़ के,कष्ट दैत नर नार ।
इत पग ग्रह उत सिन्धु पुकारत,नाव न खैवन हार ।
माझ धार कहो काहि पुकारें,भई अनाथ एक बार ।
तुम बिन कौन सहायक स्वामी,जासों करें पुकार ।
काग जहाजै ठौर न दूजो ,देखी आँख पसार ।
गज गण सुमरत तत्काल है ,कष्ट देय निरवार ।
सो जिय जानि शरण तव लीन्ही ,करूणा कर करतार ।।[68]

काम, क्रोध, लोभ, मोह से पिंड छुडाने की गुहार तो मध्यकालीन संतों ने भी लगाई थी लेकिन अपने देश के बेड़े के डगमग होने और भारत के अविद्या से ग्रसित होने की चिंता नई है,आधुनिक है।पुस्तक के प्रारम्भ में ही भुजंग प्रयात छंद में रचित *निराकार निरलेप निरलेख स्वामी* महाकवि तुलसीदास की इसी छंद में रचित विख्यात *नमामी शमीशान निर्वाण रूपं* की याद दिलाता है,वहीं दूसरी तरफ ग़जल की यह बानगी है: *अबरे तर आंसू बहाना कोई हमसे सीख जाय।बेगुनाह ही मार खाना कोई हमसे सीख जाय।। सुन के मौतों की खबर खुदरफ्ता हो जाती हैं आप। हर घड़ी जी का जलाना कोई हमसे सीख जाय।।*[69] गद्य आरम्भ होने के पहले इस पुस्तक में ग्यारह भजन,प्रार्थना और गजलें दी गयी हैं,वे रचनाकार की काव्य-प्रतिभा और शिल्प पर उनकी पकड़ को दर्शाता है।रचना के कथ्य को ,जिसका गद्य में विश्लेषण रचनाकार का उद्देश्य है,उसे संश्लिष्ट रूप में ,काव्य-रूप में प्रस्तुत कर देना आसान नहीं होता। भुजंग प्रयात छंद में रचित *भारतखंडी स्त्रियों का विनय पत्र* मानो काव्य में आलाप है जिसका विस्तार गद्य में---विलंबित और द्रुत में -----आगे होना है। आश्चर्य है कि उनके नाम से हमें न कोई कविता की पुस्तक मिलती है न उस दौर में संगृहीत किसी काव्य-संकलन में उनका उल्लेख लेकिन इन रचनाओं के करीब से गुजरने पर इतना तो पता चल ही जाता है कि स्त्री विलाप की बाईस वर्षीया लेखिका ने कवि बनने की तैयारी में कोई कसर नहीं छोड़ रखी थी।

स्त्री विलाप हरदेवी की पहली रचना है लेकिन इसमें पारंपरिक हिन्दू समाज की जैसी तीखी आलोचना की गयी है और जिस अंदाज से की गयी है,वह देखने लायक है ,लिखती हैं, " सोचने से मालूम हुआ कि इस खराबी की जड़ मूर्ख स्त्रियाँ ही हैं ,घर का बंदोबस्त सब इनके अखत्यार में हैं जो इन्हें महारानी अविद्या कराती है ,यह गुड़ियों के ,मानिंद नाचती हैं ,पंडित जी ने तो गड़बड़ स्मृति बनाई है इन्होंने एक बुढ़िया पुराण

68 हरदेवी,स्त्री विलाप,आर्य दर्पण प्रेस, शाहजहाँपुर,संवत १९३८ (1881),पृष्ठ 2

69 वही,पृष्ठ 4 -5

रचा है,जो इस पुराण के दस्तूरों को नहीं मानता तो उसे फ़ौरन किरयन(क्रिश्चियन) होने का इल्जाम लगाती हैं,धर्मशास्त्र अनुसार तो स्त्रियों को पढ़ना योग्य ही नहीं,चाहे ब्राह्मणी ही क्यों न हो ,और दुनिया के कारबार कभी बंद नहीं हो सकते चाहे विद्वान हो चाहे मूर्ख हो सब ही अपने बुद्धि अनुसार काम करते हैं पर मूर्ख स्त्रियाँ अपने रचे हुए पुराण को मानती हैं। अगर कोई विद्वान पंडित इन्हें समझावे तो जवाब देती हैं कि हम तुम्हारे धर्मशास्त्र को नहीं मानेंगी,जो हमारे पुरूषों की चाल है वही करेंगी ।अगर बहुत कहो तो भ्रम की मूरत अविद्या के प्रभाव में साफ़ कहती हैं कि हमें किरानी(क्रिश्चियन) नहीं होना।"[70] *बुढ़िया पुराण और गड़बड़ स्मृति* की अवधारणा में सामान्य विशेषण---- बुढ़िया और गड़बड़ ----व्यंग्य के धार को कैसे संदर्भानुसार तीक्ष्ण कर सकता है , देखने वाली चीज है ।इस पुस्तक की भाषा में एक भुक्तभोगी की पीड़ा को संप्रेषित करने की बेचैनी तो है ही ,साथ ही साथ विवेक और तर्क के साथ सही निष्कर्ष तक पहुँचने की विश्लेषण क्षमता भी है,पाठक को साक्षात संबोधित यह अंश देखें : " देखो पाठक गण जब तुम किसी अन्य देश में किसी से पहचान करना चाहो तो पहिले पत्र द्वारा करते हो फिर जब आपस में मुलाक़ात होती है तब थोड़ी सी प्रीति हो जाती है। जब कुछ दिन पास रहते हैं, एक दूसरे के ख्याल कलाम मिजाज चाल चलन अपने मानिंद देखते हैं, तब दोनों मित्र बन जाते हैं ,कैसा शोक करने का समय है कि जिस चीज की जड़ ही प्रीति में जमती है और इसी के भरोसे से एक दूसरे को अपना आप तमाम उम्र के लिए दे देता है ,हाय शोक बगैर जाने पहचाने पशु के सामान दे दी जाय! एक दूसरे की सूरत से भी आशना न हो !क्या तुम लोग इन में प्रीति होने की उम्मीद देखते हो !हरगिज नहीं ,देव योग से प्रीति हो जाती हो,तो हो वरना कोई सूरत नहीं नजर आती ।[71] किसी ख़ास भावना को प्रेरित करने के उद्देश्य से रचित होने वाले साहित्य की संभवत:यही विशेषताएं होती हैं----सुगम तर्क प्रणाली और सहज संप्रेष्य भाषा।

हरदेवी के प्राय: सभी रचनाओं और व्याख्यानों के केंद्र में स्त्री और विशेषकर विधवा स्त्री की समस्याएं हैं,उनके पुनर्विवाह और पुनर्वास की समस्याएँ हैं ---- औपनिवेशिक भारत में इन समस्याओं का समाधान उन्होंने स्त्रियों को जागरूक,शिक्षित और चेतस बनाने में ढूंढा,उनका विचार था कि स्त्रियों को उनकी समस्याओं से अवगत कराकर,उन समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाकर,उन्हें शिक्षित करके ही इससे पार पाया जा सकता है। उनका यह भी मानना था कि स्त्रियों को स्वाधीनता का अर्थ, परतंत्रता का बोध कराकर ही बताया जा सकता है, इसलिए उनकी अधिकाँश रचनाएं स्त्रियों को सीधे संबोधित करते हुए उनकी विचारणीय स्थिति को सामने लाती हैं; **सीमंतनी उपदेश (1882)**में खुदा से फरियाद करते हुए वे कहती हैं: *अब सहते - सहते जुल्म के हालत हुई है यह / जुबाँ में नहीं ताकते-गुफ्तार खबर ले ।हालत है दर्दनाक ज़रा गौर से सुनो /बरस हो चुके इस हालत में दस हजार खबर ले।*[72] दस हजार बरस की दर्दनाक हालत का कारण, लेखिका के अनुसार 'जहालत' है; कहती हैं , " मुद्दत से हिंदियों के दिमाग में जहालत

---

70 वही,पृष्ठ 9

71 वही ,पृष्ठ 35

72 हरदेवी,सीमंतनी उपदेश,पृष्ठ 40

की अंधेरी चल रही है ।उससे जुल्म की गर्द उड़ उड़ कर हमारे ऊपर पड़ती है ।जैसे कोई मकान बहुत देर तक गर्द पड़ने से दब जाता है उसी माफिक हमारी हालत है।हम निकलने की ताकत नहीं रखती हैं।जैसे गन्ने का रस निकाल लेने से छिलका रह जाता है वैसे ही हमारी हालत है ।"[73]और ऐसी हालत होने के बावजूद,दुखद है कि इससे उबरने की कोई कोशिश,कोई छटपटाहट नहीं दिखाई देती ,लेखिका कहती है, "जो आदमी जेलखाने में पैदा हो,या जिसका बाप-दादा उसी में कदीम से रहता हो,वह उसी जेलखाने को बहिश्त समझता है ।अगर कोई उससे कहे कि यह जेलखाना है,या उसकी बुराईयाँ दिखावे तो वह यह जवाब देता है ---'हमारे बाप-दादा इसी में रहते आए हैं ,क्या उन्हें अक्ल न थी?हम कभी इसको न छोड़ेंगे ।'ऐसों के सामने जब इस जेलखाने की बुराई की जावे वे कब सुनते हैं?सच है,जो बच्चा कफस में ही पैदा हो वह जंगल की सरसब्ज ताजा हवा की खूबियाँ क्या जाने ?बेशक पहले जंगल की हवा उसे बुरी मालूम होगी मगर जब वह वह इस हवा में आजाद फिरने को उस पिंजरे में बंद रहने से निस्वत देता है,तब कहता है--- 'अहा मैं पहले किस मुसीबत में था ,अब मैं कैसे आराम में हूँ !'[74] सीमंतनी उपदेश या कहें हरदेवी का सम्पूर्ण लेखन जेल में जन्म लेने वाले बच्चे को आजादी का एहसास कराने की जद्दोजहद से ही पैदा हुआ है ,यहाँ तक कि उनकी यात्राएं भी ----***लन्दन यात्रा(1888)*** और ***लन्दन जुबली*** **(1888)**भी पिंजरे में बंद आजन्म पराधीन स्त्रियों को स्वतंत्रता का एहसास कराने के लिए लिखा गया ।'लन्दन यात्रा' में वे कहती हैं , "*कहाँ तक कहैं इस सौभाग्य देश की स्त्रीयें पूरी स्वाधीनता के साथ जीवन सुख का लाभ लै रही हैं ,जिन्हें देख आजन्म पराधीना दुरभाग्य भार्त वासनी भगनीयों का चित्र नेत्रों के आगे आये मन में अनेक कष्टों को उपजाता है , और धियान आता है कि हे जगदीश यदि पृथ्वी पर तुमने समान वस्तुएं रची हैं और मनुष्य तो उन की प्रारब्ध क्यूं नहीं समान बनाई । हम अभागिनी भार्त अबलाओं ने क्या तुम्हारा अपराध किया है जिनकी स्वाधीनता को तुमने उन के भाग्य से एक दम जुदा कर दिया ।हाय वह पराधीन पशु जीवन कब तक भोगेंगी ,कब और किस युग के अंत में उन का उद्धार होगा वह कब मनुष्य योनि में आये जीवन को सफल जानेगी ।*"[75]इसी प्रकार लन्दन जुबली में महारानी विक्टोरिया (1819-1901)के राज्यारोहन (1837) के पचास साल पूरे होने पर 1887 में जो लन्दन में गोल्डन जुबली मनाई गयी,प्रत्यक्षत: उसका विवरण प्रस्तुत किया गया है लेकिन इसके पीछे लेखिका का उदेश्य क्या था ,यह इस *निवेदन* से स्पष्ट हो जाता है,लिखती हैं : "...देशीय भगनियों की सेवा में प्रार्थना सहित निवेदन है कि इस छोटे से पुस्तक को एक बार मन लगाय अवश्य ही पढ़ें जिस से उनपर प्रकट होगा कि एक स्त्री इतना बड़ा राज्य और प्रभुत्व पाय आलस तथा राजमद त्याग स्त्री धर्म्म पति शुशूर्षा संतान पालन राज्य शासन सारे धर्म्म समय २ पर कैसी योग्यता और

---

[73] वही,पृष्ठ 41

[74] वही,पृष्ठ 45

[75] हरदेवी ,लन्दन यात्रा,ओरिएंटल प्रेस,लाहौर,अगस्त 1888 ,पृष्ठ 116- 117

उत्तमता से किए और कर रही हैं।”[76] यूं तो हिन्दी समेत सभी भारतीय भाषाओं में रानी विक्टोरिया पर विपुल साहित्य रचा जा रहा था [77] लेकिन हरदेवी ने रानी विक्टोरिया को ऐसे पराक्रमी आदर्श शासक के रूप में नहीं प्रस्तुत किया जिसके साम्राज्य में सूर्य कभी अस्त नहीं होता बल्कि उन्हें एक ऐसी आदर्श स्त्री के दृष्टांत के रूप में प्रस्तुत किया, जो आलस और राजमद को त्याग कर स्त्री धर्म का उत्तम पालन करता हो। पूरी पुस्तक में महारानी के इन गुणों के प्रति जो बहनापा(सिस्टरहुड) भाव अभिव्यक्त हुआ है वही लेखिका अपने पाठिकाओं के साथ साझा करना चाहती है---“कहते हैं कि प्रजा के सुकृत फल से धर्म्मात्मा राजा होता है,तो हम सुकृती हैं ,परमेश्वर ऐसे सुकृत की दिन २ बढ़ती करे।”[78] लन्दन रहते हुए हरदेवी को शिक्षा की मुक्तिदायी भूमिका और शिक्षण की प्रणाली विशेष के बीच स्पष्ट सम्बन्ध का अनुभव हुआ था और आश्चर्य नहीं कि भारत लौटते ही उन्होंने किंडरगार्टन पद्धति पर एक पुस्तक लिखी --- **तालीम –ए – तीफ्लां(1889)**[79]और **भारत भगिनी(1889)** जैसी पत्रिका निकालना आरम्भ किया। आगे चलकर नारी शिल्पालय (वुमन पोलीटेक्निक:1902) की स्थापना भी इसी श्रृंखला की कड़ी है।द *इन्डियन मैगजीन* में तालीमे-तिफ्ला की समीक्षा करते हुए लिखा गया कि, “इस पुस्तक की लेखिका भारत में स्त्री शिक्षा के प्रति अपने गहन सरोकारों को बेबाकी से रखने के लिए दृढ संकल्प जान पड़ती है।इनकी पूर्व लिखित पुस्तकें ----*सीमंतनी संगीत,विधवा अश्रु,सीमंतनी उपदेश ,लन्दन जुबली,और लन्दन यात्रा* सुचिंतित पुस्तकें हैं जो भारतीय स्त्रियों को जगाने और जागरूक बनाने के उदेश्य से लिखी गयी हैं।इस पुस्तक में वे एक कदम और आगे बढकर भारत में बाल शिक्षा की अपरिष्कृत और हिंसक पद्धति की आलोचना करते हुए यूरोप की अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी और ममत्वपूर्ण किंडरगार्टन स्कूलों में प्रचलित पद्धति की अनुशंसा करती हैं।

“वर्त्तमान समय में भारतीय बच्चों को किस प्रकार पहले पहल सिर्फ भाषा सिखाया जाता है और वह भी अरबी और फारसी व्याकरण जैसे उबाऊ विषय को, लेखिका ने पहले अध्याय में इसी का वर्णन किया है कि कैसे बचपन के कई साल इसी फालतू ज्ञान को हासिल करने में बर्बाद हो जाते हैं और कुछ सचमुच के उपयोगी ज्ञान अर्जित करने के पहले ही सदा के लिए पढाई या अध्ययन से पूरी तौर पर विमुख होकर वे छोटे मोटे काम में लग जाते हैं।

---

[76] लन्दन जुबिली’ के मुखपृष्ठ पर लिखा है –“यह पुस्तक श्री हरदेवी ने देशीभाषा में रचकर भारतवासियों के लिए लन्दन से भेजा जिसको पंडित बंसीधर ड्राइंग मास्टर ओरिएंटल कालेज लाहौर ने शोधकर छपाया.न्यू इम्पीरियल प्रेस से सैय्यद रज्जब अली शाह के प्रबंध से छापा संवत **1945”** देखें, हरदेवी,लन्दन जुबली,न्यू इम्पीरियल प्रेस,लाहौर,1888,पृष्ठ

[77] देखें, **Miles Taylor; Empress: Queen Victoria and India, New Haven and London: Yale University Press,** 2018,**p.286**

[78] , हरदेवी,लन्दन जुबली,वही,पृष्ठ 56

[79] हरदेवी,तालीम –ए –तीफ्लां, ओरिएण्टल प्रेस ,लाहौर ,**1889**

“इसके विपरीत पश्चिम की शिक्षा प्रणाली का विवरण प्रस्तुत करते हुए लेखिका ने दिखलाया है कि कैसे शरीर ,बुद्धि और हृदय का समुचित विकास तभी संभव है जब बाल प्रकृति के विपरीत न जाकर उसके अनुकूल होकर सुषुप्त शक्तियों को जागृत करें।

“ श्रीमती हर देवी सीधी सादी उर्दू में लिखती हैं और उनकी शैली प्राकृतिक सजीवता लिए हुए है।भारत में सामान्यत: जिस आडम्बरपूर्ण आलंकारिक शैली को आदर्श माना जाता है उससे अधिक प्रभावशाली उनकी पंक्तियाँ होती हैं और रचना में प्रवाह और आवेग तो देखते ही बनता है। ऐसा विश्वास है कि श्रीमती हर देवी अपने देश में किंडरगार्टन प्रणाली को लागू करने का प्रयत्न करेंगी और आशा है कि उसमें वे सफल होंगी।ऐसे उपयोगी उद्देश्य के लिए अपनी श्रेष्ठ बौद्धिक क्षमताओं का प्रयोग करके वे अपने देशवासियों की कई पीढ़ियों के श्रद्धाभाजन होंगी।

“ यहाँ यह भी याद करना जरूरी है कि अभी अभी श्रीमती हर देवी ने एक स्त्री पत्रिका हिन्दी और उर्दू में निकालना आरम्भ किया है जिसका सम्पादन वे स्वयं करेंगी ।पिछले कुछ महीनों में भारत की यह दूसरी स्त्री पत्रिका है जिसका प्रकाशन आरम्भ हुआ है और इस तथ्य से इस देश के स्त्री शिक्षा के हिमायती अवश्य ही उत्साहित होंगे।”[80] हेमंत कुमारी चौधरानी की *सुगृहणी* कुछ ही महीने पहले आरम्भ हुआ था लेकिन *भारत-भगिनी* का स्वर अब तक की सभी हिन्दी पत्रिकाओं से कुछ अलग सा था ----वह सचमुच स्त्री-शिक्षा की पत्रिका थी जिसमें स्त्री के सर्वांगीण विकास के लिए हर प्रकार की जानकारी दी जाती थी ---- चाहे गर्भ धारण, प्रसूति और शरीर रक्षा से जुड़े मामले हों या सास-बहू के सम्बन्ध, आर्य समाज और अध्यापिका के गुण जैसे विषय हों, या फिर कोरिया नगर की स्त्रियों का वर्णन,जापानी युद्ध में स्त्रियों का उद्योग, ‘याद रखने की बातें’ ‘अपनी स्वदेश बहिनों के हितार्थ उत्तम प्रस्ताव’,नारी शिल्पालय ,माई भगवती पर लेख हों ,सभी के केंद्र में स्त्री को रखकर स्त्री पाठकों को संबोधित किया जाता था ।पत्रिका में कभी कभी विविध समाचार के अंतर्गत ‘कम्बोडिया के राजा की आठ हजार पत्निया हैं’,‘बर्लिन के एक 45 वर्षीय स्त्री को 28 संतान हैं’ जैसी खबर भी दी जाती थी। पुस्तक- समीक्षा, धारावाहिक उपन्यास व सत्य कथा और समालोचना भी कभी कभी प्रकाशित होता था। यह पत्रिका मासिक थी लेकिन जनवरी 1905 से पाक्षिक कर दी गयी और 1911तक इसके निकलने की सूचना हमें मिलती है[81] यानी यह पत्रिका बाईस वर्षों तक लगातार निकलती रही,वह भी किसी एक व्यक्ति के निजी प्रयत्न से!जनवरी 1905 के अंक में पत्रिका के उपसंपादक और मैनेजर हेमराज वैद्य विशारद का यह विज्ञापन बहुत कुछ कहता है,लिखते हैं, “प्यारे सज्जनों इस समय कौन ऐसा बुद्धिमान पुरूष है जो स्त्री शिक्षा के न होने से दुखी होकर उस का प्रचार न करना चाहता हो?इसी कमी को पूरा करने के लिए श्रीमती हरदेवी जी १५ वर्ष से इस पत्रिका का डेढ़ रूपये सालाना चन्दा पर मासिक निकाल रही हैं जिसके चलाने पर आज तक उनके घर का दो हजार रूपया

[80] द इन्डियन मैगजीन ,जुलाई 1889,पृष्ठ 316

[81] **Arti Minocha,Negotiation Between Private And Public in Women's Periodical Press in Early 20th Century Punjab, International Journal of Research in Humanities, Arts and Literature,vol.10,issue 8,August 2022,p.62**

खर्च हो चुका है किन्तु इस पर भी यह पत्रिका जनवरी सन १९०५ से डेढ़ रूपये सालाना चन्दा पर ही पाक्षिक (पन्दरां रोजा)कर दी गयी है।

"५७६ पृष्ठ की पत्रिका आपको डेढ़ पर साल भर में दी जायेगी जिस से हर एक ग्राहक के पीच्छे छः आने सालाना हमको नुकसान होगा किन्तु इस पर भी आप लोगों का इस तरफ बहुत ख्याल न देखकर प्यारे मित्रों मैंने दो औषधियों आपको उपहार में देने का प्रबंध किया है जिससे आप ग्राहक बनकर अपने मित्रों को भी बनाने का यत्न करेंगे ताकि यह पत्रिका आप के घरों को स्वर्ग धाम बना सके।"[82] ग्राहक बनाने के लिए पत्रिका के साथ औषधि को उपहारस्वरूप देने का यह नुस्खा वैद्य उपसंपादक के प्रबंधकीय कौशल के साथ साथ पत्रिका के मुख्य उद्देश्य ----स्त्री शिक्षा---- के प्रति कटिबद्धता को भी दर्शाता है।यह हमें नहीं भुलना चाहिए कि *बाला बोधिनी* (1874-1877)को तीन साल और *सुगृहणी को* चार साल के भीतर ही बंद कर देना पड़ा था।

हरदेवी ने *भारत भगिनी* को जिस बहनापे के भाव से संपादित किया ,उसी भाव से भारत में विधवाओं की स्थिति और उनके पुनर्विवाह की समस्या के साथ साथ स्त्री -पुरूष की समानता के विषय को हर मंच से बार बार उठाया -----कभी जिरह करने वाली सख्ती के साथ आर-पार वाले अंदाज में तो कभी नारीसुलभ व्यावहारिक नरमी से मामले को सुलझाने वाले अंदाज में! **'स्त्रियों पै सामाजिक अन्याय'(1892)** शीर्षक लेख में वे स्त्री शोषण की पड़ताल करते हुए कहती हैं :"हमें उन मनु आदिक महात्माओं से कभी ऐसे निर्दय शास्त्र की आशा नहीं है। यह किसी स्वार्थप्रिय स्त्रीकुल के शत्रु का रचा हुआ धर्मशास्त्र जिसे अधर्मशास्त्र कहना चाहिए मालूम होता है। अज्ञानी और मूर्ख विचारहीन पुरुष इसी की आज्ञाओं को प्राचीन मत समझ स्त्रियों के साथ अनेक प्रकार के अन्याय कर रहे हैं। इनकी संख्या करने से एक पुस्तक बन सकती है ,इनमें से जो बड़े -बड़े अन्याय हैं यहाँ वर्णन करती हूँ :1.) पुत्र कन्या के पालन में भेद करना 2.) विद्या से वंचित रखना 3.) अज्ञानावस्था में विवाह कर देना 4.) अयोग्य वर से विवाह कर देना 5.) पुनर्विवाह से रोकना 6 .) स्वामीधन और पिता के धन से भाग न देना 7.) सहधर्मिणी स्त्री के जीवित रहते दूसरा विवाह कर लेना।[83] इन बड़े बड़े अन्यायों से उबरने की विवेचना करते हुए वे स्त्री -पुरुष में समता की आवश्यकता महसूस करती हैं, लिखती हैं :"बिना स्त्री पुरुषों की सहायता के संसार का कोई काम ठीक तरह से नहीं चल सकता .पर जबतक उन्हें उत्तम विद्याशिक्षा से अपने बराबर नहीं समझा जाएगा तब तक देशोन्नति जैसी होनी चाहिए ,नहीं होगी। यही कारण है कि लोगों के उत्साह उद्योग का जैसा फल होना चाहिए देखने में नहीं आता...वह रोक क्या है स्त्रियों की अविद्या ,मूर्खता जो अनेक रूपों में देशोन्नति का मार्ग रोके खड़ी है।परमोत्साही देश हितैषी पुरुषों को इसी के भय से अनेक बार बड़ी -बड़ी कठिनाइयों से होकर चलना पड़ता है उनके उत्तम देशहितकारी विचारों को बहुत चोटें प्रहार खाने पड़ते हैं। इसका यही

---

[82] हरदेवी(संपादिका),भारत भगिनी,15 जनवरी 1905 ,पृष्ठ 26

[83] हरदेवी,स्त्रियों पै सामाजिक अन्याय,क्वीन प्रेस,इलाहाबाद,1892,पृष्ठ 3

कारण है कि मूर्ख स्त्रियें उन के शुभ विचार से सहमत होती हैं और जब तक उनकी सम्मत ले उन्हें शरीक न किया जायगा तबतक कुसंस्कार कुरीतियों से पीछा छुड़ाने की आशा करना सर्वथा झूठ है ...भद्रगणों! यदि देश की सच्ची उन्नति चाहते हो और अपने भविष्यत् संतान की भलाई तुमको अभीष्ट है और दूसरों की दृष्टि में गौरवता का कुछ ख्याल है तो सबसे प्रथम अपनी स्त्रियों की दशा को सुधारो और उनके अधिकारों पै पूरा ध्यान दो ।नहीं तो भविष्यत् संतान के लिए इसका परिणाम इस समय में भी कहीं बढ़कर भयानक होगा। पहिले मूल को सुधारों उसके फल शाखा पत्ते आपसे आप बिना यत्न के अच्छे हो जायेंगे।"[84]
लेख और निबंध के शिल्प में जो बातें तर्क और विश्लेषण के माध्यम से संप्रेषित होती हैं वह भाव बोध के स्तर पर आख्यान व कथा के सहारे सहज ही अवतरित की जा सकती हैं। हरदेवी ने नारी जागरण के लिए ,स्त्री-पुरूष समानता के लिए,विधवाओं के जीवन को सुधारने के लिए जो भी कथेतर गद्य में लिखा,**हुक्मदेवी (1893)** उपन्यास में मानो उसके एक पहलू को कथा के शिल्प में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया।यह सच है कि उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में जब भारत में उपन्यास जैसी ठेठ यूरोपीय विधा को आजमाया जा रहा था तो प्राय: हर भाषा में स्त्रियों को केंद्र में रखकर सामाजिक यथार्थ का उदघाटन किया जा रहा था ----वह चाहे हन्ना कैथरीन मुलेंस का बंगला उपन्यास फुलमनी ओ करूणार विवरण (1852)हो या बाबा पद्मनजी का मराठी उपन्यास *यमुना पर्यटन*(1857) हो या नजीर अहमद का उर्दू उपन्यास *मिरातुल-अरुस* (1869)हो या पंडित गौरी दत्त का हिन्दी उपन्यास *देवरानी जेठानी की कहानी*(1870) या मुंशी ईश्वरी प्रसाद और कल्याण राय रचित *वामा शिक्षक*(1872) ---इन उपन्यासों में उपन्यासकार का चाहे जो उद्देश्य रहा हो, इसमें आपको स्त्रियों के लिए एक प्रकार की आचार संहिता का प्रस्ताव मिल सकता है। हुक्मदेवी की कथा ख़त्म करने के बाद कथाकार कहता है : "पाठिका बहिनो !भ्रातृभाव अत्यंत पवित्र और स्वर्गीय सम्बन्ध है इससे बढकर संसार में पवित्रता का दूसरा स्थान नहीं है ,जब किसी समवयस्क से मिलो बातचीत करो तो जरूर हृदय में भ्रातृभाव को स्थान दे लो ।फिर संसार में पूर्ण स्वाधीनता के साथ निर्भय होकर विचरो ।किसी को तुम्हारे धवल यश को कलंकित करने का सामर्थ्य नहीं है।
"जो स्त्रियें लोकभय अथवा सम्बन्धियों की रक्षा से धर्म को बचाए रखती हैं वह सच्ची धार्मिका सती कहलाने के योग्य नहीं ।किन्तु जिनकी आत्मा में धर्म्म की श्रद्धा है सारे हृदय में प्राणों से भी अधिक जिन्हें अपना धर्म प्यारा है ।वे कठिन से कठिन परीक्षा और घोर प्रलोभनों में पड़कर भी इसकी रक्षा करती हैं वही सच्ची धार्म्मिका और सती स्त्री हैं उन्हीं का जीवन प्रशंसनीय वे ही इस संसार में धन्य हैं।"[85]कथाकार का यह जो लहजा है ,मोरल ऑफ द स्टोरी प्रस्तुत कर देने का जो अंदाज है वह इसे ठेठ यथार्थवाद के चौखटे से निकालकर भारतीय कथा-परम्परा से जोड़ देता है ।अलबत्ता किस्सागोई का यह अंदाज भी अतिपरिचित है,जैसे कथा का आरम्भ यूं होता है: "पंजाब देश के अमृतसर नामक शहर में एक रामसहाय खत्री वास करते थे ,बजाजी का काम इनके परम्परा से होता आया था ,यह भी एक बजाजी की दूकान करते,यह पिता

---

84 वही ,पृष्ठ 14-15

85 हरदेवी,हुक्मदेवी,क्वीन प्रेस,इलाहाबाद,1893,पृष्ठ 61 -62

के एकमात्र पुत्र थे इसलिए पिता की दूकान और घर इन्हीं को मिला था,जो कुछ दूकान से बचता उसी में अपना और कुटुंब का पालन करते ,यद्यपि कुछ विद्या नहीं पढ़े थे पर थोड़ी सी उर्दू और बजाजी के अक्षरों में बड़े होशियार और हिसाब में बड़े चतुर थे ,स्वभाव के बहुत ही साधू दयावान और विनीत थे ।...वह अपने धर्म्म और उदारता के कारण नगर २ में प्रसिद्ध हो गए। सब कोई इनकी प्रशंसा करता जहां कहीं साधु महात्मा आये सुनते वहां सब काम त्यागकर पहुंचते और घंटो ईश्वर की चर्चा बड़ी रुची के साथ सुनते और उस मंडली को एक दिन अपने गृह पै बुलाय जरूर भोजन करवाते,इनकी नम्रता विनीत भाव शीलादिक देख सब कोई मोहित हो जाते थे,देखने में बहुत रूपवान गोरा रंग बड़े २ उज्ज्वल नेत्र जो मानों लज्जा के घर थे ,उंचा मस्तक,पतले २ लाल होंठ,शरीर सुन्दर सुगठन उंचा कद,मधुर वाणी,मुख पर हृदय के सद्गुण और उन्नत भाव तथा गंभीरता साफ़ प्रगट थी एक प्रकार का तेज इनके प्रसन्न मुख पै हर समय दीप्यमान रहता था जो एक बार इनसे बातचीत कर लेता कभी नहीं भूलता आयु ४० वर्ष के निकट थी,सर पै गुलानार रंग की पगड़ी,गले में नैनसुख का कुर्ता,किनारदार धोती और कंधो पै मलमल का दुपट्टा यह बारह बास इनकी पोशाक थी गरज जैसा बाहर से शरीर सुन्दर था वैसा सदुणों से आत्मा भी रूपवान था ।"[86] बहरहाल यह गद्य, विशेषकर जब उस दौर के विकासमान हिन्दी खड़ी बोली गद्य के स्वरूप को सामने रख कर देखें तो अत्यंत प्रांजल जान पड़ता है। वर्णनात्मक शैली में प्रभावपूर्ण वातावरण निर्माण और चरित्र चित्रण के लिए स्वाभाविक प्रवाह व रवानगी का क्या स्थान है,यह इसे पढ़ते हुए महसूस किया जा सकता है । किस्सागोई की यह शैली आगे चलकर प्रेमचंद ने और विकसित की लेखिका के मातृसुलभ. अमहानगरीय भाव बोध को बोल-चाल के हिन्दी मुहावरों के प्रयोग ने गद्य को प्राणवान तो बनाया ही है,साथ ही साथ स्त्री-अनुभव की विशिष्टता को रेखांकित करने में भी सहायक हुआ है ।

हुक्मदेवी के बाद हरदेवी की कोई और रचना हमें नहीं मिलती है,अलबत्ता हमें *भारत भगिनी* के अंक जून 1911 तक जरूर मिलते हैं जिनमें हरदेवी लिखित सम्पादकीय के अतिरिक्त कुछ छिटपुट लेख और प्रतिक्रियाएं लगातार प्रकाशित होती रहीं ।ऐसा मालूम पड़ता है कि वे नारी शिल्पालय और भारत भगिनी के कामों में ज्यादा से ज्यादा वक्त देना तय कर लिया था। *भारत भगिनी* के अंकों में बगैर किसी सरकारी अनुदान के पत्रिका को जारी रखने और नारी शिल्पालय को चलाने की दिक्कतों के बारे में [87] पढ़ते हुए हमें उनकी मुश्किलों और जद्दोजहद का पता तो चलता ही है, साथ ही साथ उनकी भाषा में आ रहे निरंतर निखार और परिष्कार का भी अनुभव होता है।

---

86 हुक्म्देवी,वही,पृष्ठ 1

87 "मैंने आगे भी इसी पत्रिका में अपनी बहनों की सेवा में शिल्पालय की तरफ ध्यान दिलाया था पर शोक कि किसी ने कुछ परवाह नहीं की ।संसार में कोई काम भी यत्न के बिना नहीं चल सकता ।एक दूसरे की सहायता से ही जगत के सारे व्यवहार चल रहे हैं तब भला दो चार बहिनें इस को कब तक ज़िंदा रख सकेंगी ।यह कैसी लज्जा की बात है कि हमारी बहिन श्रीमति पंडिता रमा बाई ईसाई धर्मचारियों की सहायता से आज दो तीन हजार अनाथ स्त्रियों का पालन कर रही हैं और हम से दस बारह विधवा स्त्रियों का दुःख दूर नहीं किया जाता है ।देश की रानी महारानी धनवान विचारवान दयावती बेटियों दुखियों का दुःख दूर करना भूखों का अन्न वस्त्र देना महादान है । उठो अपनी जाति की अनाथ विधवा बहिनों की रक्षा करो ,खुले दिल से दान देकर हमारे उत्साह को बढ़ाओ,परमात्मा तुम्हें इस पुण्य का बदला देंगे ।" भारत भगिनी,मार्च 1904 ,पृष्ठ 55-56

*** *** ***

रमण सिन्हा
भारतीय भाषा केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली 1100 67
फोन. 927 866033 4

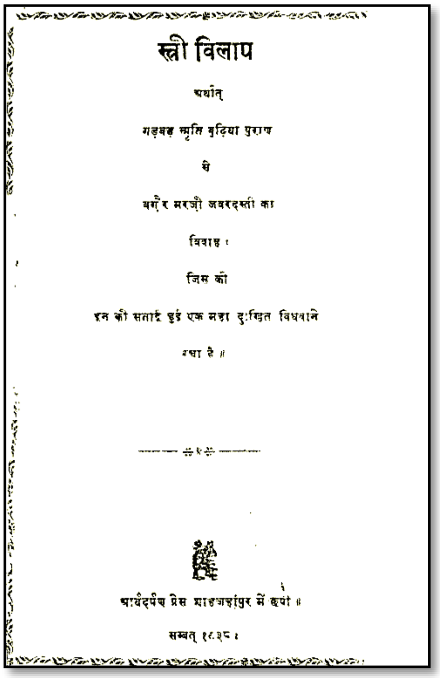

स्त्री विलाप

अर्थात्

गड़बड़ स्मृति बुढ़िया पुराण

से

बगैर मरज़ी जबरदस्ती का

विवाह।

जिस को

इन की सताई हुई एक महा दुःखित विधवाने

रचा है॥

आर्यदर्पण प्रेस शाहजहांपुर में छपा॥

सम्वत् १९३८।

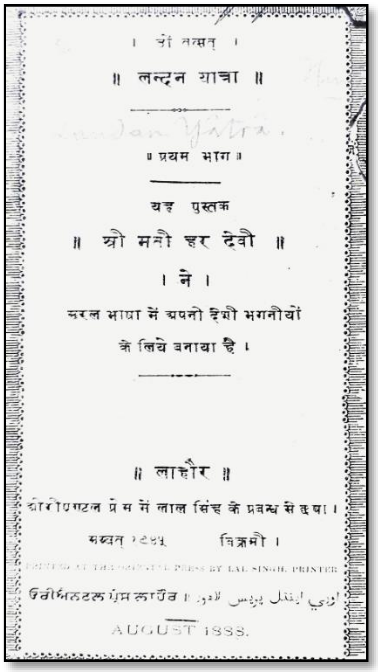

। ओं तत्सत् ।

॥ लन्दन यात्रा ॥

॥ प्रथम भाग ॥

यह पुस्तक

॥ श्रीमती हर देवी ॥

। ने ।

सरल भाषा में अपनी देशी भगनीयों

के लिये बनाया है।

॥ लाहौर ॥

ओरीएण्टल प्रेस में लाल सिंह के प्रबन्ध से छपा।

सम्वत् १९४५ विक्रमी।

PRINTED AT THE ORIENTAL PRESS BY LAL SINGH, PRINTER

AUGUST 1888.

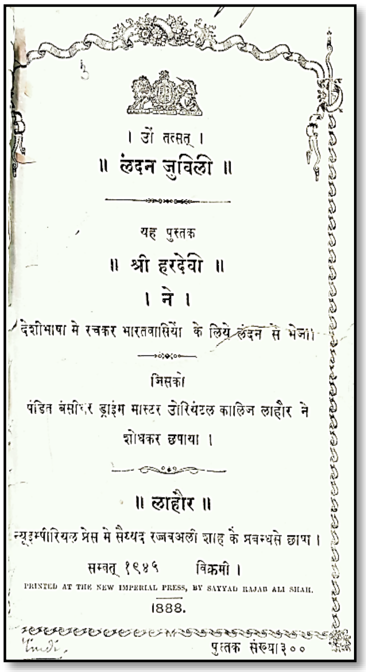

। ओं तत्सत् ।

॥ लंदन जुबिली ॥

यह पुस्तक

॥ श्री हरदेवी ॥

। ने ।

देशीभाषा मे रचकर भारतवासियें के लिये लंदन से भेजा।

जिसको

पंडित बंसीधर ड्राइंग मास्टर ओरियंटल कालिज लाहौर ने

शोधकर छपाया।

॥ लाहौर ॥

न्यूइम्पीरियल प्रेस मे सैय्यद रज्जबअली शाह के प्रबन्धसे छापा।

सम्वत् १९४५ विक्रमी।

PRINTED AT THE NEW IMPERIAL PRESS, BY SAYYAD RAJAB ALI SHAH.

1888.

पुस्तक संख्या ३००

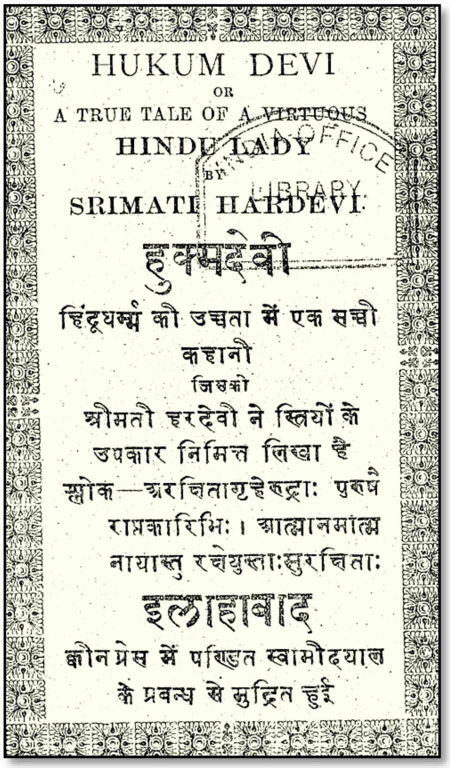

HUKUM DEVI

OR

A TRUE TALE OF A VIRTUOUS

HINDU LADY

BY

SRIMATI HARDEVI

हुक्मदेवी

हिंदूधर्म्म की उच्चता में एक सच्ची

कहानी

जिसको

श्रीमती हरदेवी ने स्त्रियों के

उपकार निमित्त लिखा है

श्लोक—अरक्षिताग्रहेरुद्धाः पुरुषै

राप्तकारिभिः। आत्मानमात्म

नायास्तु रक्षेयुस्ताःसुरक्षिताः

इलाहाबाद

क्वीन प्रेस में पण्डित स्वामीदयाल

के प्रबन्ध से मुद्रित हुई

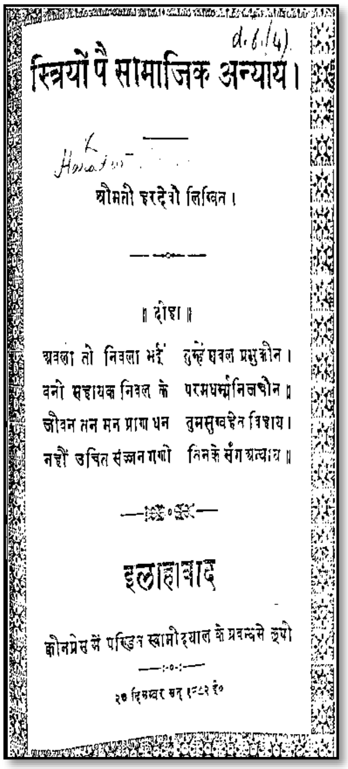

स्त्रियों पै सामाजिक अन्याय।

श्रीमती हरदेवी लिखित।

॥ दोहा ॥

अबला तो निबला भई तुम्हें सबल प्रभु कीन।

बनो सहायक निबल के परमधर्म्म निज चीन॥

जीवन तन मन प्राण धन तुमसुखहेत बिताय।

नहीं उचित सज्जन गणो तिनके संग अन्याय॥

इलाहाबाद

क्वीनप्रेस में पण्डित स्वामीदयाल के प्रबन्धसे छपी

२७ दिसम्बर सन् १८८२ ई०

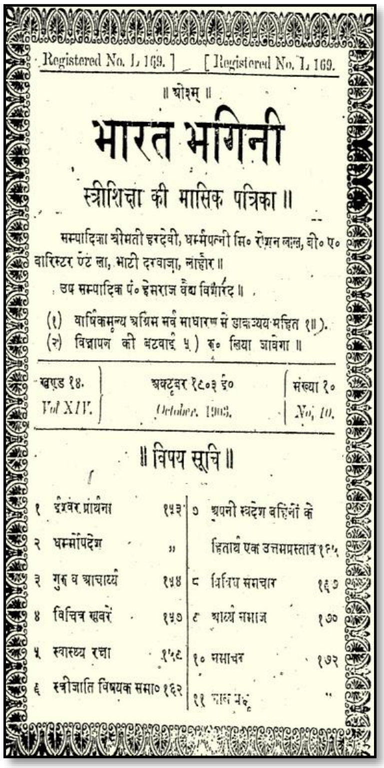

Registered No. L 169.] [Registered No. L 169.

॥ ओ३म् ॥

भारत भगिनी

स्त्रीशिक्षा की मासिक पत्रिका॥

सम्पादिका श्रीमती हरदेवी, धर्म्मपत्नी मि० रोशन लाल, बी० ए० बारिस्टर एट ला, भाटी दरवाज़ा, लाहौर॥

उप सम्पादिक पं० हेमराज वैद्य विशारद॥

(१) वार्षिकमूल्य अग्रिम सर्व साधारण से डाकव्यय सहित १॥).

(२) विज्ञापन की बटवाई ५) रु० लिया जावेगा॥

खण्ड १४. Vol XIV.	अक्टूबर १९०३ ई० October, 1903.	संख्या १० No. 10.

॥ विषय सूचि ॥

१	ईश्वर प्रार्थना	१५३	७	अपनी स्वदेश बहिनों के हितार्थ एक उत्तमप्रस्ताव	१६५
२	धर्म्मोपदेश	"	८	विविध समाचार	१६७
३	गुरु व आचार्य्य	१५४	९	आर्य्य समाज	१७०
४	विचित्र खबरें	१५७	१०	मसाचार	१७२
५	स्वास्थ्य रक्षा	१५९	११	[illegible]	"
६	स्त्रीजाति विषयक समा०	१६२			